A Daily News Magazine
इंदौर
बुधवार, 23 अक्टूबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 27, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्या भारत शेख हसीना को राजनीतिक शरण देगा?

शुभज्योति घोष

क़रीब ढाई महीने पहले बांग्लादेश की सत्ता गंवाने के बाद शेख़ हसीना एक सैन्य विमान से दिल्ली पहुंची थीं। उसके बाद उनको सार्वजनिक तौर पर नहीं देखा गया है। सोशल मीडिया पर भी उनकी कोई तस्वीर सामने नहीं आई है। फोन पर उनकी बातचीत के कुछ ऑडियो सामने आने के बावजूद इसका कोई सबूत नहीं मिला है कि उनमें हसीना की ही आवाज़ है।

भारत सरकार के किसी प्रवक्ता या मंत्री ने अब तक इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है कि दिल्ली पहुंचने के बाद शेख़ हसीना या उनके साथ आई छोटी बहन शेख़ रिहाना कहां और कैसे हैं। किसी प्रेस कॉन्फ्रेंस या इंटरव्यू तक में भी किसी ने इस बारे में कोई टिप्पणी नहीं की है। अब बीते 17 अक्टूबर की शाम को भारत सरकार ने औपचारिक रूप से केवल इतना ही कहा है कि वो अभी भी भारत में ही हैं। बीबीसी बांग्ला ने बीते सप्ताह बताया था कि शेख़ हसीना के संयुक्त अरब अमीरात या मध्य पूर्व के किसी देश में जाने की ख़बर पूरी तरह निराधार है। अब भारत सरकार ने भी आधिकारिक तौर पर इस बात की पुष्टि कर दी है।

यह बात सही है कि शेख़ हसीना के भारत प्रवास के मुद्दे पर केंद्र सरकार ने पूरी तरह गोपनीयता बनाए रखी है। लेकिन सरकार के सामने ये साफ नहीं है कि उनको कितने दिनों तक भारत में रखना होगा। दिल्ली के साउथ ब्लाक के एक शीर्ष अधिकारी अपनी निजी राय जाहिर करते हुए कहते हैं, 'इट्स गोइंग टू बी ए लांग हॉल।' उनकी राय में सरकार इस हक़ीकत के लिए धीरे-धीरे तैयार हो रही है कि शेख़ हसीना को लंबे समय तक भारत में रहने की अनुमति देनी होगी।

तो क्या अतीत में जिस तरह तिब्बती धर्मगुरू दलाई लामा और अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्रपति मोहम्मद नजीबुल्लाह को सपरिवार राजनीतिक शरण दी गई थी, शेख़ हसीना के मामले में भी कुछ वैसा ही सोचा जा रहा है? इस बारे जानकारों का जवाब इस प्रकार है-

भारत की नज़र में फिलहाल शेख़ हसीना एक 'गेस्ट, बट अंडर कम्पलशन' हैं। यानी वो देश की एक सम्मानित अतिथि हैं जिनको विशेष परिस्थिति में मजबूरन भारत आना पड़ा है। भारत सरकार यह बात अच्छी तरह जानती है कि अपने देश में सुरक्षा के ख़तरे को देखते हुए वो भारत आई हैं। अब इस अतिथि के दर्जे के आधार पर ही उनको लंबे समय तक यहां रखा जा सकता है। इसमें भारत सरकार को कोई दिक़्क़त नहीं है। देश के पुराने मित्र और अतिथि के तौर पर उनको तमाम सम्मान और सुविधाएं मिलेंगी।

फिलहाल शेख़ हसीना को राजनीतिक शरण देने की भारत की कोई योजना नहीं है। सबसे बड़ी बात यह है कि शेख़ हसीना ने ख़ुद भी राजनीतिक शरण के लिए कोई आवेदन नहीं किया है। लेकिन भारत सरकार जानती है कि आगे चल कर अगर ऐसा कोई प्रस्ताव आता है तो इस मुद्दे पर तमाम राजनीतिक दल सहमत होंगे और शेख़ हसीना को राजनीतिक शरण देने के मुद्दे पर राजनीतिक तौर पर आम सहमति बनाने में कोई दिक़्क़त नहीं होगी।

फ़िलहाल ऐसा लगता है कि भारत शेख़ हसीना को अतिथि के तौर पर रखना चाहता है, लेकिन शरण नहीं देना चाहता। 17 अक्टूबर को दिल्ली में विदेश मंत्रालय की नियमित साप्ताहिक ब्रीफिंग में प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, 'आप सबको बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री के भारत में रहने के बारे में जानकारी है। उन्हें सुरक्षा कारणों से बहुत कम समय के नोटिस पर यहां आना पड़ा था।'

शेख़ हसीना को जिन हालात में भारत आना पड़ा है, वैसी स्थिति में आने वाले किसी भी अतिथि को 'डीब्रिफिंग सेशन' से गुज़रना पड़ता है और हसीना भी इसका अपवाद नहीं हैं। शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों ने उनको इस बारे में ब्रीफ कर दिया है कि भारत को उनसे क्या उम्मीदें हैं। यानी उनको क्या कहना चाहिए और क्या नहीं। साथ ही उनसे बातचीत के आधार पर कुछ नोट्स लिए गए हैं।

भारत के पूर्व राजदूत अजय बिसारिया भी मानते हैं कि शेख हसीना को दिल्ली में रहने की अनुमति देना भारत के लिए एक बेहद संवेदनशील मुद्दा हो सकता है। लेकिन सच कहें तो उनको समुचित सम्मान के साथ इस देश में रखने के अलावा भारत के सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं है। देश के कूटनयिक तबके या अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञों में भी इस बात पर आम राय है कि संकट की इस घड़ी में भारत को शेख़ हसीना के साथ खड़ा रहना ही होगा। ऐसा नहीं करने से भविष्य में दक्षिण एशिया या किसी पड़ोसी देश का कोई नेता भारत की मित्रता पर भरोसा नहीं कर सकेगा।

दिल्ली के थिंक टैंक आईडीएसए की सीनियर फेलो स्मृति पटनायक याद दिलाती हैं कि साल 1975 में शेख़ मुजीब हत्याकांड के बाद शेख़ हसीना ने जब सपरिवार भारत में शरण ली थी, तब भी उनको तकनीकी रूप से राजनीतिक शरण नहीं दी गई थी। उस वक्त भी उनकी पहचान को गोपनीय रखते हुए उन्हें राष्ट्रीय अतिथि के तौर पर ही रखा गया था।

उस घटना के क़रीब आधी सदी बाद अब मौजूदा नरेंद्र मोदी सरकार भी ठीक इसी रास्ते पर चलने का संकेत दे रही है। लेकिन मेहमाननवाजी का चरित्र बदलने के बावजूद वह आज भी मेहमाननवाजी ही है। भारत की राय में शेख़ हसीना को अतिथि के तौर पर यहां रहने देना ही इस कूटनीतिक समस्या का सबसे स्वीकार्य समाधान है। हालांकि कई पर्यवेक्षक मानते हैं कि दिल्ली में शेख़ हसीना की मौजूदगी भारत और बांग्लादेश की नई सरकार के आपसी संबंधों में रोड़ा बन सकती है।

किसी हाई-प्रोफाइल विदेशी नेता को राजनीतिक शरण देने की स्थिति में संसद में इसकी घोषणा करनी पड़ती है। फैसला लेने से पहले विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ इस मुद्दे पर विचार-विमर्श किया जाता है। हालांकि ऐसा करना बाध्यतामूलक नहीं है। शेख हसीना को राजनीतिक शरण देने के मामले में एक बड़ी सहूलियत यह है कि भारत में कोई भी राजनीतिक पार्टी संभवतः इस प्रस्ताव का विरोध नहीं करेगी। शेख हसीना को राजनीतिक शरण देने की स्थिति में एक और सहूलियत होगी कि सिर्फ इसी आधार पर उनके प्रत्यर्पण या उनको बांग्लादेश की सौंपने की मांग खारिज की जा सकेगी। लेकिन ऐसा करने से बांग्लादेश सरकार के साथ भारत के संबंधों में कड़वाहट पैदा होगी। फिलहाल बांग्लादेश में भारत का निवेश और वहां चलने वाली परियोजनाओं में उसकी हिस्सेदारी सैकड़ों करोड़ों में है, इसलिए यह भी देखना होगा कि दिल्ली यह खतरा मोल लेगी या नहीं।

(बीबीसी हिंदी पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

रूस-यूक्रेन जंग केवल बातचीत से रुकेगी, भारत मदद को तैयार

रूस में द्विपक्षीय बातचीत से पहले बोले पीएम मोदी, रूसी राष्ट्रपति से मिले गले

नई दिल्ली/मॉस्को (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्रिक्स समिट में शामिल होने के लिए मंगलवार को रूस के कजान शहर पहुंचे। यहां उन्होंने रूसी राष्ट्रपति पुतिन के साथ द्विपक्षीय बातचीत की। इस दौरान पुतिन ने कहा, हमारे संबंध इतने अच्छे हैं कि आप मेरी बात बिना ट्रांसलेटर (अनुवादक) के समझ जाते हैं। वहीं, प्रधानमंत्री मोदी ने यूक्रेन जंग पर भारत के स्टैंड को कायम रखा। उन्होंने कहा, हर समस्या का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से हो। उन्होंने कहा- भारत का हर प्रयास मानवता के समर्थन में है। हम जल्द से जल्द शांति की बहाली चाहते हैं। पीएम मोदी पिछले 4 महीनों में दूसरी बार रूस गए हैं। इससे पहले जब वे जुलाई में रूस गए थे तो उन्होंने पुतिन को सलाह दी थी कि बम-बंदूकों और गोलियों से शांति संभव नहीं है। इसके बाद वे यूक्रेन दौरे पर भी गए थे। जहां उन्होंने जेलेंस्की से कहा था- मैंने पुतिन से आंख में आंख मिलाकर कहा था कि ये जंग का समय नहीं है।

यूक्रेन युद्ध के बाद रूस में सबसे बड़ा आयोजन

सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, फरवरी 2022 में यूक्रेन में युद्ध की शुरुआत के बाद से रूसी राष्ट्रपति द्वारा आयोजित ये अब तक का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम है। इस समिट में रूस के अलावा ईरान और चीन जैसे देश हैं, जो अमेरिका को सीधी चुनौती देते रहे हैं। पुतिन ने इसके जरिए पश्चिम को संदेश दिया है कि रूस अलग नहीं पड़ा है। हालांकि पुतिन ने सम्मेलन से पहले इस बात से इनकार किया कि यह समूह पश्चिम विरोधी गठबंधन है।

बिहार के अररिया में रहना है तो हिंदू बनना होगा

- गिरिराज सिंह की यात्रा में बोले बीजेपी सांसद प्रदीप सिंह, मचा बवाल

अररिया (एजेंसी)। बिहार में भारतीय जनता पार्टी सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने अररिया में एक विवादित बयान देकर हंगामा खड़ा कर दिया है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा के दौरान एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि अररिया में रहना है तो हिंदू बनना होगा। उनका यह बयान सोशल मीडिया पर आग की तरह फैल गया है और लोग उनकी आलोचना कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि अररिया में रहना है तो सामाजिक सद्भाव कायम रखना होगा।

जबलपुर की ऑर्डनेंस फैक्ट्री में ब्लास्ट, दो कर्मचारियों की मौत

10 से ज्यादा झुलसे, दो की हालत नाजुक, बम फिलिंग के दौरान हादसा

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर की ऑर्डनेंस फैक्ट्री खमरिया (ओएफके) में मंगलवार सुबह भीषण ब्लास्ट हो गया। इसमें दो कर्मचारियों की मौत हो गई। 10 से ज्यादा झुलस गए हैं। दो की हालत नाजुक है। फैक्ट्री प्रबंधन ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। ब्लास्ट फैक्ट्री के एफ-6 सेक्शन की बिल्डिंग नंबर 200 में हुआ। फैक्ट्री के जनरल मैनेजर समेत अन्य अधिकारी मौके पर मौजूद हैं।

कैंट विधायक अशोक रोहाणी घायलों को देखने के लिए खमरिया स्थित अस्पताल पहुंचे। सूत्रों के मुताबिक हादसे में एलेक्जेंडर टोप्पो ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि रणवीर कुमार की मौत अस्पताल में इलाज के दौरान हो गई। बताया जा रहा है कि एलेक्जेंडर टोप्पो का शव सेक्शन के आसपास 9 हिस्सों में मिला है। श्यामलाल ठाकुर और चंदन कुमार की हालत गंभीर है। उन्हें निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों में कुमार गौरव, सुनील कुमार, उमेश मौर्य, प्रवीण दत्ता, कृष्ण पाल, एसके मंडल और रामजी शामिल हैं।

बम फिलिंग के दौरान हुआ ब्लास्ट

जानकारी के मुताबिक फैक्ट्री के एफ-6 सेक्शन में बम फिलिंग का काम चल रहा था। इसी दौरान हाइड्रोलिक सिस्टम में अचानक ब्लास्ट हो गया। ब्लास्ट कैसे हुआ और किसकी लापरवाही थी, इसकी जांच शुरू कर दी गई है।

सुप्रभात

किसी का इश्क़ किसी का
ख़याल थे हम भी
गए दिनों में बहुत
बाकमाल थे हम भी
हमारी खोज में रहती थीं
तितलियां अक्सर
कि अपने शहर का हुस्नो
जमाल थे हम भी
ज़मीं की गोद में सर रख के
सो गए आखिर
तुम्हारे इश्क़ में कितने
निढाल थे हम भी
ज़रूरतों ने हमारा ज़मीर चाट लिया
वगरना क़ायल ए रिज़्क़ ए
हलाल थे हम भी
हम अक्स अक्स बिखरते
रहे इसी धुन में
कि ज़िंदगी में कभी
लाजवाल थे हम भी।

– परवीन शाकिर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद में हुए महत्वपूर्ण निर्णय

एमपी में एक लाख सरकारी नौकरियां

प्रदेश में संचालित 12,670 मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों को पूर्ण आंगनवाड़ी केन्द्रों में उन्नयन का निर्णय

भोपाल (नप्र)। एमपी में एक लाख पदों पर सरकारी भर्तियों होंगी। इसकी प्रक्रिया दिसंबर 2024 तक शुरू कर दी जाएगी। यह निर्णय मंगलवार को सीएम डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में किया गया। बैठक में यह भी फैसला हुआ कि सरकारी कर्मचारियों को इस माह 28 तारीख को वेतन दिया जाएगा।

वहीं नाबालिग रेप पीड़िताओं के गर्भवती होने की स्थिति में उसके और उनके बच्चे को सहायता देने के लिए हर जिले के कलेक्टर को 10 लाख रुपए का फंड दिया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश में वर्तमान में

संचालित 12 हजार 670 मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों को पूर्ण आंगनवाड़ी केन्द्र में उन्नयन किये जाने का निर्णय लिया गया। उल्लेखनीय है कि मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों में एक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता का प्रावधान है। निर्णय अनुसार इन मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों के उन्नयन के बाद एक पद आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं एक पद आंगनवाड़ी सहायिका का होगा। उन्नयित 25 आंगनवाड़ी केन्द्रों पर एक पर्यवेक्षक के मान से कुल 476 पर्यवेक्षक के पद स्वीकृत किये गये। केन्द्र सरकार के निर्धारित मापदण्ड उन्नयित आंगनवाड़ी केन्द्रों पर लागू होंगे। मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों को पूर्ण आंगनवाड़ी केन्द्रों में उन्नयन किए जाने पर केन्द्रांश राशि रूपये 3401.90 लाख एवं राज्यांश राशि 17945.82 लाख होगा। इस प्रकार कुल राशि रूपये 21347.71 लाख अतिरिक्त वार्षिक व्यय भार आयेगा।

रिलायंस, हिंडाल्को, पतंजलि के आएंगे निवेश

डिप्टी सीएम शुक्ल ने कहा कि रीवा में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव होने जा रहा है। रीवा में सीमेंट, पावर, सोलर एनर्जी और पर्यटन क्षेत्र में वृहद संभावनाएं हैं। रीवा एयरपोर्ट के परिचालन को लेकर भी कैबिनेट में चर्चा हुई। यहां से चलने वाले विमान का प्रति यात्री किराया रेलवे के एसी थ्री-टीयर के किराए से कम है। कॉन्क्लेव के लिए 4 हजार रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं। रिलायंस, हिंडाल्को, पतंजलि, डालमिया ग्रुप समेत सीमेंट ग्रुप के अन्य बड़े उद्योगपति आ रहे हैं।

नवंबर से तेज होगा पुनर्गठन आयोग का काम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा, मार्च 2024 में प्रदेश की प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन का प्रस्ताव किया गया था। इस क्रम में प्रदेश के संभाग, उप संभाग, जिले, तहसील, विकासखंडों के पुनर्गठन की प्रक्रिया आरंभ की जा रही है। इसके लिए आम जन व जनप्रतिनिधि अपने सुझाव, आवेदन और अभ्यावेदन के रूप में पुनर्गठन आयोग को प्रस्तुत कर सकेंगे।

बहराइच में झटका, बुलडोजर ऐक्शन पर लगी 'सुप्रीम' रोक

- एससी ने कहा-आदेशों का उल्लंघन करने का जोखिम उठाना चाहते हैं तो उनकी मर्जी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बहराइच हिंसा के आरोपियों पर कल तक बुलडोजर नहीं चलेगा। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने योगी सरकार को बुधवार तक कार्रवाई ना करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस बीआर गवई ने कहा, 'आप इस अदालत द्वारा पारित आदेशों से अवगत हैं। यदि वे (उत्तर प्रदेश सरकार) इन आदेशों का उल्लंघन करने का जोखिम उठाना चाहते हैं, तो यह उनकी पसंद है।' वैसे हमने ये कहा है कि अगर सार्वजनिक स्थल पर अतिक्रमण है तो मेरे आदेश में वो भी साफ लिखा है। गौरतलब है कि पिछले हफ्ते उत्तर प्रदेश के बहराइच शहर में सांप्रदायिक दंगे हुए थे। हाल ही में अधिकारियों ने कुछ लोगों की इमारतों को गिराने के लिए नोटिस जारी किए थे। इनका नाम दंगों से

जुड़ी एक एफआईआर में आरोपी के तौर पर दर्ज है। उनका आरोप है कि उनकी इमारतें अवैध हैं। उनमें से तीन लोगों ने बुलडोजर एक्शन के खिलाफ अर्जी दाखिल की थी। याचिकाकर्ताओं की ओर से सीनियर एडवोकेट सीयू सिंह ने दलील दी। उन्होंने बेंच के सामने कहा कि यह आवेदन तीन लोगों के द्वारा दायर किया गया है। उनको तीन दिन के अंदर घर गिराने का नोटिस मिला है। राज्य सरकार ने नोटिस का जवाब देने के लिए केवल तीन दिन का समय दिया है। सिंह ने दलील दी कि याचिकाकर्ता के पिता और भाइयों ने सरेंडर कर दिया है और कथित तौर पर 17 अक्टूबर को नोटिस जारी किए गए और 18 की शाम को चिपकाए गए। उन्होंने कहा कि हमने रविवार को सुनवाई की मांग की थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सुप्रीम कोर्ट ने सार्वजनिक सड़कों, फुटपाथों, रेलवे लाइनों पर अतिक्रमण से जुड़े मामले को छोड़कर बिना इजाजत के पूरे देश में तोड़फोड़ पर रोक लगा दी है। 1 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने सरकारी अधिकारियों द्वारा गैरकानूनी बुलडोजर से की गई तोड़फोड़ को चुनौती देने वाली याचिकाओं के एक समूह पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 23 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जब तक आखिरी तमिल जिंदा है,तब तक कोई छू नहीं सकता

- उदयनिधि ने फिर दिया विवादित बयान, कहा-बच्चों को तमिल नाम दें

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के डिप्टी सीएम उदयनिधि स्टालिन ने सनातन को बीमारी बताने वाली टिप्पणी पर माफी मांगने से इनकार कर दिया है। उन्होंने सोमवार को चेन्नई में एक इवेंट में कहा कि मैंने सनातन को लेकर

वही बातें कहीं, जो पेरियार, अन्नादुराई और करुणानिधि भी कहते थे। उदयनिधि ने कहा कि मेरे बयानों को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया। तमिलनाडु समेत देशभर में कई कोर्ट केस भी हुए। मुझे माफी मांगने के लिए भी कहा गया, लेकिन मैं कलैगनार (कला के विद्वान) का पोता हूं। मैं माफी नहीं मांगूंगा। मेरी टिप्पणियों का उद्देश्य महिलाओं के प्रति कथित दमनकारी प्रथाओं को बताना था। हिंदू धर्म में महिलाओं को पढ़ने की अनुमति नहीं थी। तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने राज्य के लोगों से अपने बच्चों के तमिल नाम रखने की अपील की है।

जम्मू-कश्मीर में बीजेपी का बनेगा डिप्टी स्पीकर

- सीएम उमर अब्दुल्ला का बड़ा फैसला,कांग्रेस के दावे की अनदेखी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष और सीएम उमर अब्दुल्ला ने बड़ा 'खेल' कर दिया है। उन्होंने विधानसभा उपाध्यक्ष का पद विपक्षी दल यानी बीजेपी को देने का फैसला किया है। विधानसभा उपाध्यक्ष

पद पर उनके सहयोगी दल कांग्रेस ने भी दावेदारी की थी, इसके बाद भी उन्होंने बीजेपी का साथ दिया। एक्सपर्ट के मुताबिक, इस चतुर चाल से उमर अब्दुल्ला ने दो निशाना साधा है। पहला, उन्होंने यह संकेत दिया है कि केंद्रशासित प्रदेश की नई सरकार बीजेपी और केंद्र से मिलकर चलेगी। साथ ही, कांग्रेस को भी यह जता दिया है कि वह प्रेशर पॉलिटिक्स से हटकर सारे फैसले खुद करेगी। कश्मीर के सियासत में बीजेपी का समर्थन करने या सहयोग लेने वाली पार्टियों का हश्र बुरा हो जाता है, इसलिए उमर अब्दुल्ला फूंक-फूंककर कदम रख रहे हैं। धारा 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश बन चुका है। अब लेफ्टिनेंट गवर्नर संवैधानिक तौर पर सरकार और प्रशासन के मुखिया हैं।

ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक लिमिटेड के पास 10 हजार बसों के ऑर्डर

हैदराबाद/भोपाल। अग्रणी इलेक्ट्रिक बस आपूर्तिकर्ता ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक लिमिटेड (ओजीएल) ने दूसरी तिमाही और पहली छमाही के

लिए अपने संयुक्त वित्तीय परिणामों की घोषणा की। निदेशक मंडल ने आज आयोजित अपनी बैठक में इन उल्लेखनीय परिणामो को आधिकारिक रूप से मंजूरी दे दी। तिमाही के दौरान, ओलेक्ट्रा ने 315 इलेक्ट्रिक वाहन वितरित किए, जो वित्त वर्ष 2023-24 में 154 की तुलना में 105 प्रतिशत की वृद्धि है। कंपनी अब तक 2,217 इलेक्ट्रिक वाहनों की डिलीवरी कर चुकी है। कंपनी के पास अब तक कुल 10,503 बस ऑर्डर पंजीकृत हो चुके हैं।कंपनी ने 30 सितंबर, 2024 को समाप्त छमाही के लिए प्रति शेयर आय (ईपीएस) 8.72 रुपये दर्ज की, जो पिछले साल 4.40 रुपये प्रति शेयर थी।परिणामों पर टिप्पणी करते हुए, ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक लिमिटेड के सीएमडी के. वी. प्रदीप ने कहा, हमारा ध्यान उत्पादन बढ़ाने और अपनी प्रौद्योगिकी क्षमताओं को बढ़ाने पर है और हमारी ऑर्डर बुक बहुत अच्छी है।

घाटी में लश्कर का नया आतंकी संगठन टीएलएम हुआ ऐक्टिव

पुलिस का बड़ा दावा-यह नए आतंकियों की कर रहा है भर्ती

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में मंगलवार को नए आतंकवादी संगठन तहरीक लब्बैक या मुस्लिम (टीएलएम) का खुलासा हुआ है। काउंटर इंटेलीजेंस विंग

(सीआईके) और पुलिस ने मंगलवार को श्रीनगर, गांदरबल, बांदीपोरा, कुलगाम, अनंतनाग और पुलवामा में कई लोकेशन पर छापा मारा। पुलिस ने बताया कि टीएलएम बैन आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का ही एक अलग ग्रुप है। सूत्रों ने बताया कि टीएलएम आतंकवादियों की भर्ती करने का एक मॉड्यूल है, जिसे पाकिस्तान का हैंडलर बाबा हमास चला रहा था। सीआईके और पुलिस का ऑपरेशन अभी जारी है। टीएलएम के बारे में और ज्यादा जानकारी सामने आएगी। गांदरबल अटैक में एक डॉक्टर समेत 7 मजदूरों की जान गई थी। हमले के चश्मदीद ने बताया कि 2 आतंकवादी शॉल ओढ़कर आए और मेस में बैठे मजदूरों पर गोली चलाई। अब तक 10 लोकेशन पर छापा मारा गया है। 7 संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। 14 मोबाइल फोन और एक लैपटॉप जब्त किया गया है। कुछ मटेरियल भी जब्त किया गया है। गांदरबल अटैक की जिम्मेदारी टीएलएम ने ली, अब सामने आया कि गांदरबल अटैक की जिम्मेदारी भी लश्कर के ही एक संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने ली है।

मोदी सरकार में सरपट दौड़ रही देश की अर्थव्यवस्था

एनआरआई भी हुए खुश, 5 महीने में जमा कर दिए 66 हजार करोड़ रुपए

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की सरपट दौड़ती अर्थव्यवस्था से प्रवासी भारतीय (एनआरआई) भी खुश हैं। शायद यही कारण है कि उन्होंने इस साल भारत में पैसा जमा या निवेश करने का नया रेकॉर्ड बना दिया। इस साल अप्रैल-अगस्त में एनआरआई ने विभिन्न स्कीमों में 7.8 बिलियन डॉलर (करीब 66 हजार करोड़ रुपये) की रकम जमा या निवेश की। यह एक साल पहले समान अवधि की तुलना में दोगुनी है। यह जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक के अपने नए मंथली बुलेटिन में दी है। पिछले साल की समान अवधि (अप्रैल-अगस्त) में एनआरआई ने 3.7 बिलियन डॉलर की रकम जमा की थी। इस बार जमा रकम में डॉलर और रुपया दोनों में वृद्धि हुई है। एनआरआई ने यह रकम बैंक और निवेश की कई योजनओं में जमा की है। एनआरआई की ओर से जमा रकम में वृद्धि भारतीय बाजारों में हाई रिटर्न और मजबूत बुनियादी बातों को दर्शाती है। एनआरआई ने 7.8 बिलियन डॉलर की जो रकम जमा की है उसमें से 3.5

बिलियन डॉलर एफसीएनआर (बी) में जमा हुए। यह रकम डॉलर में जमा होती है। वहीं 2.5 बिलियन डॉलर एनआरई (आरए) में जमा हुए। यह रकम रुपये के रूप में जमा की जाती है। एनआरई (आरए) में रकम को निवेशक तब जमा करता है जब उसे भविष्य में रुपये के मजबूत होने की उम्मीद होती है। ऐसा इसलिए ताकि जब वह स्कीम मैच्योर हो जाए तो वह ज्यादा मात्रा में डॉलर घर वापस ले जा सकें। आमतौर पर ऐसी स्कीम एक से पांच साल की अवधि की होती हैं। एनआरआई की ओर से जमा रकम में वृद्धि बताती है कि दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में भारत में स्थिर रिटर्न है। भारत की अर्थव्यवस्था कई दूसरे देशों की तुलना में अपेक्षाकृत मजबूत है। केंद्रीय बैंक की नई मौद्रिक नीति रिपोर्ट बताती है कि भारत अप्रैल-जून तिमाही में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था रही है।

एलएसी पर पेट्रोलिंग समझौते पर ड्रैगन ने भी लगाई मुहर

आर्मी चीफ बोले-चीन पर भरोसा जमने में अभी वक्त लगेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पेट्रोलिंग समझौते के बाद मंगलवार को चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा कि हम अपना सीमा विवाद मिलकर सुलझाएंगे। इंडियन आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने मंगलवार को इस समझौते को अच्छा कदम बताया। उन्होंने कहा- सबसे पहले दोनों देशों को दोबारा विश्वास पैदा करना होगा। इसके लिए सैनिकों का एक-दूसरे को देखना और बातचीत करना जरूरी है। पेट्रोलिंग के जरिए इसके लिए सही माहौल मिलेगा। भारत और चीन ने एक दिन पहले 21 अक्टूबर को पेट्रोलिंग पर सहमति जताई थी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था

कि भारत और चीन में सीमा पर पेट्रोलिंग सिस्टम को लेकर समझौता हुआ है। इससे मई, 2020 (गलवान टकराव) से पहले की स्थिति वापस आएगी। यह सकारात्मक है। आर्मी चीफ बोले- बफर जोन मैनेजमेंट, डी-एस्केलेशन जरूरी भारत और चीन के बीच समझौता होने के बाद आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा, हम दोबारा भरोसा हासिल करने की प्रोसेस में हैं। इसमें वक्त लगेगा। सेनाओं का पीछे हटना, बफर जोन मैनेजमेंट भी इसके लिए अहम है। हम भरोसा कैसे पैदा करेंगे। जब हम एक-दूसरे को सुन सकेंगे और एक-दूसरे को संतुष्ट कर सकेंगे। हम यह भरोसा जता पाएंगे कि हम उसमें आगे जाएंगे।

रतलाम में महालक्ष्मी मंदिर का खुला खजाना

श्रीलंका का 100 रुपए का नोट, सोने की अंगूठी निकली, सजावट के लिए आए 22 लाख से ज्यादा रुपए

रतलाम (नप्र)। दीपावली के पहले रतलाम के महालक्ष्मी मंदिर का दानपात्र (मंगलवार) दोपहर खोला गया। दानपात्र में श्रीलंका का 100 रुपए का नोट समेत सोने-चांदी की अंगूठी निकली। नोटों की गिनती अब भी हो रही है। मंदिर में दीपावली पर पांच दिन तक नोटों व आभूषणों से सजावट होगी। इसके लिए अब तक करीब 22 लाख से अधिक कीमत के नए नोट आ चुके हैं, गिनती का सिलसिला अब भी जारी है। तहसीलदार ऋषभ ठाकुर के निर्देश पर नाजिर भेरुलाल मालवीय और पटवारी राजेश रावल गिनती कर रहे हैं।

इधर, सूतक के दौरान पूजा करने के विरोध के बाद संजय पुजारी को हटाकर प्रशासन ने अन्य पुजारी को नियुक्त कर दिया है। पूर्व में पदस्थ रहे पुजारी के कार्यकाल के दौरान मंदिर में रखी हर एक सामग्री की जानकारी प्रशासन जुटा रहा है। यहां तक हाल ही में सजावट के लिए आए नोटों की भी गिनती प्रशासन ने की है। मंदिर में पूर्व पुजारी ने अपने नाम से मां लक्ष्मी जी की तस्वीर बनाकर शासकीय पुजारी लिखवाकर मंदिर में रख रखी थी। वह भी प्रशासन ने अलमारी में रखवा दी है। वहीं अब प्रशासन मंदिर में हर एक चीज नए पुजारी को सुपुर्द कर उनकी निगरानी में रख रहा है।

दानपात्र में नोटों के साथ निकली चिल्लर:

दोपहर के समय नाजिर भेरुलाल मालवीय की उपस्थिति में पटवारियों की टीम ने दानपात्र खोला, जिसमें बड़ी मात्रा में नोट और चिल्लर निकली है। नोटों की छंटनी कर अलग-अलग रखे जा रहे हैं। दानपात्र में से 100 रुपए का श्रीलंका का नोट, सोने की अंगूठी व चांदी के पैर, चांदी के घुंघरु भी निकले हैं। पटवारी मुकेश मरमट, विजय मकवाना, राजेश रावल, जगदीश कसेरा, बाबुलाल मुनिया, गिरीश शर्मा एवं विकास व्यास नोटों को अलग-अलग कर गिनती में लगे हैं। शाम तक राशि की गणना हो पाएगी।

प्रदूषण के खिलाफ हरियाणा सरकार का बड़ा ऐक्शन

24 अफसर किए गए सस्पेंड, अब तक 18 किसान गिरफ्तार

चंडीगढ़ (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण के बीच हरियाणा सरकार ने अपने राज्य में पराली जलाए जाने की घटना को गंभीरता से लिया है और सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त ऐक्शन लिया है।

हरियाणा के कृषि विभाग ने विभिन्न जिलों में तैनात 24 अधिकारियों को इस मामले में कोताही बरतने के आरोप में निलंबित कर दिया है। ये अधिकारी अपने-अपने इलाकों में पराली जलाने की घटना को रोक पाने में नाकाम रहे थे। सरकार ने डिप्टी कमिश्नरों और डिप्टी डायरेक्टरों से मिली सिफारिशों के आधार पर ये कार्रवाई की है। इसके अलावा हरियाणा सरकार ने पिछले कुछ दिनों में कैथल जिले में 18 किसानों को खेतों में पराली जलाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। दिल्ली में खासतौर से अक्टूबर और नवंबर के दौरान प्रदूषण का स्तर बढ़ने के लिए अक्सर हरियाणा और पड़ोसी पंजाब में पराली

जलाने को जिम्मेदार ठहराया जाता है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया, ''पिछले कुछ दिनों में पराली जलाने के लिए 18 किसानों को गिरफ्तार किया गया लेकिन बाद में उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया क्योंकि यह अपराध जमानती है।''

हरियाणा में कैथल जिले के पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय) बीरभान ने बताया कि पराली जलाने के लिए वायु (प्रदूषण रोकथाम एवं नियंत्रण) अधिनियम और कानून के अन्य प्रासंगिक प्रावधानों के तहत मामले दर्ज किए गए हैं। पानीपत, यमुनानगर और अंबाला समेत कुछ अन्य जिलों में भी पराली जलाने के लिए हाल में प्राथमिकियां दर्ज की गयी हैं।

कहा जाता है कि धान की फसल के बाद किसान बड़े पैमाने पर खेतों में पराली जला देते हैं, ताकि अगली फसल के लिए खेत तैयार किया जा सके लेकिन इससे बड़े पैमाने पर वायु प्रदूषण होता है।

पंजाब-हरियाणा के खेतों से उठा ये धुआं दिल्ली-एनसीआर तक प्रदूषण फैलाने में बड़ा कारक है। हरियाणा के मुख्य सचिव टी वी एस एन प्रसाद ने रविवार को उपायुक्तों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि पराली जलाने की घटनाओं पर प्रभावी रूप से अंकुश लगाया जाए। उच्चतम न्यायालय ने पराली जलाने के मामले में उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ मुकदमा नहीं चलाने को लेकर हरियाणा और पंजाब की सरकारों को बुधवार को फटकार लगायी थी। न्यायमूर्ति अभय एस ओका, न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई करने में विफल रहने के लिए हरियाणा और पंजाब सरकार के अधिकारियों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने का वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) को निर्देश दिया। रबी की फसल गेहूं की बुआई के लिए किसान अपने खेतों को साफ करने के लिए धान के अवशेषों (पराली) को जलाते हैं, क्योंकि कटाई और बुआई के बीच की अवधि बहुत कम होती है।

वक्फ बिल पर जेपीसी मीटिंग में जमकर बवाल

- टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी ने बोतल फोड़ी, किए गए सस्पेंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद में वक्फ बिल पर मंगलवार को हुई जेपीसी की बैठक के दौरान टीएमसी सांसद और बीजेपी सांसद के बीच जमकर बहस हुई। इस दौरान कल्याण बनर्जी ने वहां रखी कांच की पानी की बोतल मेज पर दे मारी। जेपीसी मीटिंग में किए गए अभद्र व्यवहार के लिए सांसद कल्याण बनर्जी को एक दिन के लिए सस्पेंड कर दिया गया है। वे अगली बैठक में शामिल नहीं हो सकेंगे। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने उनके सस्पेंशन के लिए प्रस्ताव रखा था। जिस पर 9-8 से वोटिंग हुई। बोतल फेंकने से कल्याण के अंगूठे और एक उंगली में चोट लगी। जिसके चलते उन्हें इलाज के लिए ले जाया गया। घटना के बाद कुछ देर के लिए मीटिंग को रोका भी गया था। वक्फ (संशोधन) बिल 8 अगस्त को लोकसभा में पेश किया गया था और विपक्ष की आपत्ति के बीच इसे जेपीसी को सौंपा गया था। कमेटी को अगले संसद सत्र के पहले हफ्ते में अपनी रिपोर्ट लोकसभा को सौंपनी है।

अब इंडिगो-विस्तारा की 30 फ्लाइट्स में बम की धमकी

8 दिन में 120 से ज्यादा विमानों को धमकियां,सरकार बोली-सख्त कानून लाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। 30 विमानों को एक बार फिर सोमवार देर रात बम से उड़ाने की धमकी मिली है। न्यूज एजेंसी के सूत्रों के मुताबिक इनमें इंडिगो, विस्तारा और एअर इंडिया की डोमेस्टिक और इंटरनेशनल फ्लाइट्स शामिल हैं।

पिछले 8 दिन में 120 से ज्यादा विमानों में बम हमले की धमकी मिल चुकी है। इंडिगो के प्रवक्ता ने मंगलवार को कहा कि सोमवार को उसकी चार उड़ानों को सुरक्षा संबंधी अलर्ट मिले। इनमें मंगलुरु से मुंबई आ रही 6ई164 फ्लाइट, अहमदाबाद से जेद्दा जा रही 6ई 75 फ्लाइट, हैदराबाद से जेद्दा जा रही 6ई67 फ्लाइट और लखनऊ से पुणे आ रही 6ई 118 शामिल हैं। विस्तारा और एअर इंडिया के प्रवक्ताओं ने मंगलवार को पुष्टि की कि सोमवार को कुछ उड़ानों को सोशल मीडिया पर सुरक्षा संबंधी धमकी मिली

थी। हमने संबंधित अधिकारियों को इसकी जानकारी दी और सभी प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन किया गया।

सिविल एविएशन मंत्री राममोहन नायडू ने सोमवार को कहा था कि धमकियां भले ही फर्जी हैं, लेकिन हम इन्हें हल्के में नहीं ले सकते। हम इसके खिलाफ सख्त कानून लाएंगे। विमानों को धमकी से निपटने के लिए सख्त कानून लाने की तैयारी केंद्रीय उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू ने सोमवार को कहा- ऐसी धमकी देने वालों के नाम 'नो फ्लाई लिस्ट' में शामिल किए जा सकते हैं।

पंजाब को दहलाने की साजिश कर रहे थे रिंडा और लांडा

- एनआईए ने किया बड़ा दावा,अपनी चार्जशीट में खोली पोल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में आतंकी साजिश के मामले में एनआईए ने खालिस्तानी आतंकी रिंडा और लांडा के गिरफ्तार किए गए सहयोगियों के खिलाफ चार्जशीट फाइल की है।

चार्जशीट में कहा गया है कि विदेश में रहने वाले बैन आतंकी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशलन के इन आतंकियों ने पंजाब और देश के अन्य हिस्सों को दहलाने की साजिश रची थी। इस मामले में मोहाली की स्पेशल कोर्ट में आरोपी गुरप्रती सिंह उर्फ गोपी के खिलाफ चार्जशीट फाइल की गई है। गोपी तरनतारन का रहने वाला है। एनआईए की जांच के मुताबिक दिसंबर 2022 में सरहाली पुलिस स्टेशन में हुए आरपीजी हमले में आरोपी शामिल था।

निगम ने सामान जब्त किया तो विवाद, हंगामा

दुकानदारों का आरोप- मारपीट की, त्योहार के समय सामान उठा ले गए

इंदौर (एजेंसी)। त्योहार के दौरान लोगों को ट्रैफिक जाम से बचाने के लिए राजबाड़ा क्षेत्र में ट्रैफिक अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत सड़कें और फुटपाथ पर से कब्जे हटाए जा रहे हैं। कार्रवाई के दौरान जब टीम पालिका प्लाजा पहुंची तो विवाद बढ़ गया। दुकानदारों और निगम की टीम के बीच हाथापाई की नौबत आ गई। आरोप है कि विक्रेताओं को टीम ने दौड़ाया और पीटा। यहां फुटपाथ पर जूता-चप्पल की दुकानें लगती हैं। निगम की टीम उन्हें हटाने पहुंची। मारपीट की नौबत आ गई। विक्रेताओं का कहना था कि चालान काट देते लेकिन सामान क्यों जब्त किया। दरअसल, उन्हें हटाने के दौरान सामान जब्त किया जा रहा था तभी विक्रेताओं ने कुछ अपशब्द कहे। इस पर निगम की टीम और विक्रेताओं में कहासुनी हो गई। निगम के सुपर वाइजर का कहना था कि हम कार्रवाई के लिए आए तो अपशब्द कहे। इसके बाद विवाद शुरू हुआ। वहीं दुकानदार बोले कि ट्रैफिक के नाम पर हमें हटाने आ गए जबकि हमारे कारण कोई दिक्कत नहीं है। क्या काम नहीं करें। हमारा 40 हजार का सामान ले गए। इनका अधिकार चालान बनाने का है लेकिन मारने का अधिकार किसने दिया। उधर, निगम अफसरों का कहना है कि चालान के पैसे नहीं दिए, इसलिए सामान जब्त किया।

प्रशासन की टीम ने वाहनों पर चालानी कार्रवाई की- प्रशासन की टीम ने नंदलालपुरा चौराहा से गुरुद्वारा, गुरुद्वारा से पीपली बाजार तक (दोनों तरफ) सड़क व फुटपाथ पर पार्क किए गए वाहनों पर चालानी कार्रवाई की। इस दौरान एसडीएम प्रियंका चौरसिया ने वाहन चालकों व व्यापारियों को समझाइश दी कि गाड़ियां अपने परिसर में ही पार्क करवाएं।

सराफा व्यापारी विधायक से बोले- राजबाड़ा से बाजार का रास्ता खुलवाएं

त्योहारों के लिए राजबाड़ा पर की गई यातायात व्यवस्था पर सराफा एसोसिएशन ने विधायक के समक्ष आपत्ति जताई है। एसोसिएशन का कहना है कि दो पहिया वाहनों को बाजार में आने से रोकने के कारण सराफा और आसपास के बाजार का कारोबार प्रभावित हो रहा है।

ग्राहक बाजार तक पहुंच नहीं पा रहे हैं, इसलिए इसे खोला जाए। चर्चा के तत्काल बाद ही विधायक ने नगर निगम बाजार समिति के प्रभारी और सराफा टीआई से बात करके व्यवस्था बनाने के लिए कहा है। सोमवार को सराफा एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल रांका और पदाधिकारी विधायक गोलू शुक्ला से मिलने पहुंचे। उन्होंने विधायक शुक्ला को बताया, वाहन चालकों को राजबाड़ा या नंदलालपुरा की ओर मोड़ दिया जाता है। जाम का कारण राजबाड़ा चौक पर ई-रिक्शा, सिटी बसें और सामान बेचने वालों की बड़ी संख्या में लगी दुकानें हैं। इनको व्यवस्थित कर जाम की स्थिति में सुधार नहीं किया जा रहा है। पुलिस की इस व्यवस्था से लोग अपने वाहन लेकर बाजार की ओर नहीं आ पाते हैं। इसलिए वाहनों को सराफा और आसपास के बाजार की ओर आने दिया जाए। हम छोटे दुकानदारों को हटाने के पक्ष में नहीं हैं, लेकिन यातायात सुचारु करके इनको आसपास शांति पथ या अन्य स्थानों पर खड़ा करें। सिटी बस और ई रिक्शा को राजबाड़ा से हटाएं। शुक्ला ने कहा, संबंधितों से चर्चा कर व्यवस्था ठीक करवाएंगे।

इंदौर में बीजेपी युवा मोर्चा उपाध्यक्ष-पत्नी पर केस

व्यापारी से प्रॉपर्टी के सौदे के नाम पर लिए थे दो करोड़ रुपए

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की एमजी रोड पुलिस ने एक व्यापारी की शिकायत पर बीजेपी युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष कपिल गोयल और उसकी पत्नी दीपिका के खिलाफ 420,406,34 धारा में केस दर्ज किया है। व्यापारी ने अप्रैल 2024 में उपाध्यक्ष के खिलाफ कमिश्नर को लिखित शिकायत की थी। मामले की जांच एसीपी को सौंपी गई थी। जांच रिपोर्ट सामने आने के बाद दोनों को आरोपी बनाया गया है। बता दें कि युवा मोर्चा अध्यक्ष सौगात मिश्रा और उपाध्यक्ष कपिल गोयल के खिलाफ दो करोड़ रुपए की धोखाधड़ी के आरोप लगे थे। इस लेनदेन की पहली बातचीत पार्टी कार्यालय पर ही हुई थी। फरियादी व्यापारी भाजपा से जुड़ा है। इसका जिक्र भी उसने शिकायत में किया था। शिकायत की कॉपी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव समेत पार्टी के बड़े नेताओं और पुलिस कमिश्नर को भेजी थी। एमजी रोड पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार व्यापार का नाम जयेश पुत्र लक्ष्मी नारायण व्यास, निवासी नारायण बाग कॉलोनी है। जयेश ने इंदौर पुलिस कमिश्नर को वकील कृष्ण कुमार कुन्हारे के माध्यम से बीजेपी युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष कपिल गोयल और अन्य लोगों के खिलाफ शिकायत की थी। जयेश ने अपनी शिकायत में बताया था कि बीजेपी युवा मोर्चा के नगर अध्यक्ष सौगात मिश्रा के माध्यम से उनकी पहचान कपिल गोयल से हुई थी। कपिल ने बताया था कि उसे एक प्रॉपर्टी का सौदा करना है। इसके लिये दो करोड़ की मांग की थी। व्यापारी व्यास को कुछ समय बाद रूपए लौटाने के लिये कहां था। इसमें से 1 करोड़ रुपए 7 अगस्त 2023 को दिए गए थे। बाकी के 1 करोड़ रुपए 28 अगस्त को दिए गए थे। कपिल ने इसके बदले चेक और स्टाम्प दिए थे। रुपए वापस करने को लेकर वह आनाकानी कर रहा था। सोमवार रात एमजी रोड पुलिस ने कपिल गोयल और उसकी पत्नी दीपाली गोयल पर केस दर्ज कर लिया। अब पूरे मामले में जांच की जा रही है।

इसलिये बनी पत्नी आरोपी- कपिल गोयल ने 2 करोड़ रूपए लेने के बाद उसे वापस लौटाने के लिये जयेश के वाट्सएप पर लेटर की पीडीएफ भेजी थी। जिसमें पीएनबी बैंक से लोन सेन्शन होने की बात कही गई थी। इसमें किसी ओर के लोन को लेटर में कांट छांट करते हुए कपिल गोयल और पत्नी दीपिका का नाम डाला गया था। इस लेटर की जयेश ने पीएनबी बैंक से डिटेल निकाली तो वह लेटर फर्जी और एडिट किया हुआ निकला। वकील डॉक्टर रूपाली राठौर और कृष्ण कुमार कुन्हारे के माध्यम से यह लेटर की कॉपी भी पुलिस अफसरों को जांच में दी गई थी।

सरवटे बस स्टैंड पर युवक का उत्पात

कुर्सियां उठाकर फेंकी, व्यापारी से की अभद्रता, वीडियो वायरल

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के छोटी ग्वालटोली इलाके में एक युवक का उत्पात मचाने का वीडियो सामने आया है। दुकान पर बैठे लोगों पर युवक ने कुर्सियां फेंकी। काफी देर तक हंगामा किया और अपने दोस्तों के साथ बाइक पर बैठक चला गया। पुलिस ने व्यापारी की शिकायत पर आदम चेक काटा है। मामले में जांच कर रही है। टीआई संजू कामले ने बताया कि, सरवटे बस स्टैंड का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। उसके मुताबिक सोमवार रात को यहां पर तीन युवक नाश्ता करने पहुंचे थे। एक ने शराब के नशे में दुकानदार से विवाद किया और अपशब्द कहे। यहां पर वह काफी देर तक हंगामा करता रहा। इसके बाद काम करने वाले कर्मचारी के साथ भी झूमाझटकी की। दुकान की कुर्सियां उठाकर काउंटर के ऊपर फेंकी। टीआई के मुताबिक, दुकानदार की शिकायत पर पुलिस ने एनसीआर की कारवाई की है। पूरे मामले में जांच की जा रही है।

इंदौर में तीसरी मंजिल से गिरा युवक, मौत

टेंट व्यवसायी के यहां लगा रहा था दिवाली की लाइटिंग

इंदौर (एजेंसी)। खुडैल रोड पर टेंट व्यवसायी के यहां दिवाली की लाइटिंग लगाते समय एक कर्मचारी तीसरी मंजिल से नीचे आ गिरा। उसे उपचार के लिए नजदीक के अस्पताल ले जाया गया। यहां पर उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम किया है। खुडैल पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक राजेश (32) पुत्र सीताराम पटोरकर, निवासी अचलपुर अमरावती को उसका भाई मगन मृत अवस्था में सोमवार देर शाम एमवाय लेकर आया। पुलिस को दिए बयान में उसने बताया कि राजेश उसके मालिक जगदीश यादव निवासी देवगुराड़िया के मकान में लाइटिंग का काम कर रहा था। इस दौरान जगदीश की बेटियां भी छत पर मौजूद थीं। तब टावर के ऊपर से राजेश का संतुलन बिगड़ा और वह तीसरी मंजिल से नीचे गिर गया। गंभीर हालत में उसे नोबल अस्पताल ले जाया गया। यहां उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। भाई मगन ने बताया कि दोनों करीब 6 साल से ज्यादा समय से यहां पर काम कर रहे हैं। दोनों भाई इसी मकान में बने कमरे में नीचे रहते थे। राजेश का एक बेटा और बेटी है जो मां के साथ गांव में रहते हैं।

इंदौर में एक्सीडेंट में यशवंत क्लब के कुक की मौत

तेज रफ्तार वाहन ने बाइक को मारी टक्कर, व्हाट्सएप ग्रुप से परिवार तक पहुंची जानकारी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूडिया इलाके में रोड एक्सीडेंट में यशवंत क्लब के कुक की मौत हो गई। हादसे के बाद आसपास के लोगों ने व्हाट्सएप ग्रुप पर फोटो और वीडियो शेयर किए। जिससे रात में परिवार तक जानकारी पहुंची। इसके बाद परिवार सीधे एमवाय अस्पताल पहुंचा। लसूडिया पुलिस के मुताबिक, घटना बायपास पास पर ओमेक्स सिटी के पास अरडिया ब्रिज की है। यहां पर गोपाल (45) पुत्र परशुराम सुवेधी निवासी सिल्वर कॉलोनी मांगलिया को बाइक से जाते समय तेज रफ्तार वाहन ने टक्कर मार दी। लोगों ने एंबुलेंस को कॉल किया। इसके बाद गोपाल को एमवाय में भर्ती कराया गया। जहां उसकी रात में ही मौत हो गई। हादसे के बाद लोगों ने पहचान के लिए फोटो व्हाट्सएप ग्रुप पर डाले। जिससे परिवार तक जानकारी पहुंची। भाई विष्णु ने बताया कि, गोपाल यशवंत क्लब में कुक का काम करता था। रात में वह अपने घर आ रहा था। तभी हादसे का शिकार हो गया। गोपाल के परिवार में 11 साल का बेटा और उसकी पत्नी है। वहीं भाई अपने परिवार के साथ अलग रहता है।

35 में 1 किलो प्याज बेच रही सरकार

एक ग्राहक को 2 किलो; रिटेल में 50-60 रुपए पहुंचे रेट

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर - भोपाल में प्याज के रेट अक्टूबर में 50 से 60 रुपए किलो तक पहुंच गए हैं। आने वाले दिनों में प्याज और महंगा होगा। इस महंगाई से राहत देने के लिए नेशनल को-ऑपरेटिव कंज्यूमर फेडरेशन ऑफ इंडिया 35 रुपए में 1 किलो प्याज बेच रहा है। भोपाल और इंदौर में इसकी शुरुआत भी हो गई है। शर्त यह है कि 1 ग्राहक को एक बार में सिर्फ 2 किलो प्याज ही मिलेगा। मध्यप्रदेश में एनसीसीएफ ने प्याज की अच्छी खरीदी की है, जो अब ग्राहकों को सस्ते रेट में बेचा जा रहा है। शाखा प्रबंधक अपर्णा सिंह ने बताया, भोपाल और इंदौर में सस्ते में प्याज बेचने की शुरुआत कर दी है। बाकी के शहरों में भी प्याज बेचने का प्लान है।

भोपाल में इन जगहों पर बेच रहे प्याज

एनसीसीएफ ने सस्ती प्याज के लिए अरेरा हिल्स, 10 नंबर मार्केट, एमपी नगर समेत 5 जगह स्टॉल लगाए हैं। वहीं, 11 नंबर बस स्टॉप के पास अरेरा कॉलोनी स्थित ऑफिस के सामने भी स्टॉल लगाया है। यहां वैन के जरिए प्याज पहुंचाया जा रहा है। तीन दिन में 200 क्विंटल से ज्यादा प्याज बिक चुका है।

इंदौर में भी चलित स्टॉल

इंदौर में भी चलित स्टॉल लगाए गए हैं। यानी, वैन घूमकर लोगों को सस्ते में प्याज उपलब्ध करवा रही है। अगले कुछ दिनों में जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन समेत प्रदेश के दूसरे जिलों में इसकी शुरुआत हो सकती है।

थोक में 30-35 रुपए तक पहुंचा प्याज

भोपाल की करोंद सब्जी मंडी में प्याज के थोक भाव 30 से 40 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गए हैं, जबकि फुटकर में यह 50 रुपए किलो है। अच्छी क्वालिटी का प्याज और भी महंगा है। करोंद मंडी सब्जी व्यापारी संघ के अध्यक्ष मोहम्मद नसीम ने बताया कि अभी महाराष्ट्र समेत अन्य राज्य से प्याज की आवक कम है। कई जगहों पर नई फसल बारिश की वजह से खराब हो गई। नई फसल की अच्छी आवक आने तक प्याज महंगा ही रहेगा। भोपाल में अच्छी क्वालिटी वाला प्याज 50 रुपए किलो से अधिक रेट पर बिक रहा है।

महंगाई से राहत देने के लिए उठाया कदम

एनसीसीएफ अफसरों के अनुसार, भोपाल और इंदौर में लोगों को महंगाई से राहत देने के लिए 35 रुपए किलो के हिसाब से प्याज दे रहे हैं। महंगाई कंट्रोल करने सरकार और एनसीसीएफ जुटे हुए हैं। बाजार में रेट घटने तक सस्ती प्याज उपलब्ध करवाई जाएगी। पिछले साल 25 रुपए किलो में बेची गई थी। अबकी बार रेट 10 रुपए तक बढ़ाए गए हैं।

आटे से लेकर दाल तक सस्ते में देता है एनसीसीएफ- एनसीसीएफ आटे से लेकर दाल तक सस्ते में ग्राहकों को उपलब्ध करवाता है। पिछले साल गेहूं का आटा प्रति किलो 27.50 रुपए पर बेचा गया। वहीं, चना और तुअर की दाल भी बेची गई।

ऑनलाइन पार्ट टाइम वर्क के नाम पर 60 लाख ठगे

प्रोडक्शन मैनेजर को हर दिन 4 हजार रुपए कमाने का लालच देकर फ्रॉड

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर क्राइम ब्रांच ने एक प्राइवेट कंपनी के प्रोडक्शन मैनेजर की शिकायत पर फ्रॉड का केस दर्ज किया है। केस दो मोबाइल नंबर के यूजर्स पर किया गया। आरोपियों ने गोल्ड कंपनी में ऑनलाइन पार्ट टाइम वर्क का झांसा देकर हर दिन 4 हजार रुपए तक कमाने का लालच दिया। उनसे करीब 60 लाख रुपए की ठगी कर दी। क्राइम ब्रांच ने मोहम्मद हिदायतुल्ला खान की शिकायत पर सौम्या प्रकाश और एक अन्य आरोपी पर केस दर्ज किया है। उन्होंने बताया कि आरोपियों ने कई ट्रांजेक्शन के जरिए 59 लाख 94 हजार की धोखाधड़ी की है। हिदायतुल्ला के मुताबिक, वे पीथमपुर में निजी कंपनी में काम करते हैं। उनके पास वॉट्सऐप नंबर से मैसेज आया। मैसेज भेजने वाली लड़की ने अपना नाम सौम्या प्रकाश बताया। उसने पार्ट टाइम काम का आफर दिया। हर दिन 2 से 4 हजार रुपए इनकम की बात कही। शुरू में तो इनकार किया, लेकिन लड़की ने डेमो देने की बात कही। इस पर उसकी बात मान ली।

मैसेज भेजकर बोली- गोल्ड ज्वेलरी बिकने पर मिलेगा कमीशन

हिदायतुल्ला ने बताया कि अपना नाम सौम्या बताने वाली लड़की ने उन्हें पोर्टल लिंक भेजी। मोबाइल नंबर रजिस्टर्ड करने का कहा। बोली कि उसकी गोल्ड कंपनी अकाउंट में 10 हजार रुपए डाल देगी। 18 टास्क पूरे करने होंगे। गोल्ड की ज्वेलरी दिखाना होगी। सेल आईकॉन का बटन दबाने पर वह बिक जाएगी। प्रत्येक ज्वेलरी की कीमत और ब्रिकी मूल्य अलग होगा। इसके बदले कमिशन मिलेगा।

दो बदमाशों ने युवक को मारा चाकू

शराब खरीदने को लेकर हुआ था विवाद, पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के कनाड़िया इलाके में वाइन शॉप के बाहर एक युवक को बाइक सवार दो बदमाशों ने चाकू मार दिया। कर्मचारियों ने एंबुलेंस को कॉल कर घायल को एमवाय अस्पताल में भर्ती करवाया। युवक के बयान के बाद पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश में जुट गई है। कनाड़िया पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, अजय उर्फ शिवा पुत्र धनसिंह राठौर निवासी निपानिया पर हमला करने के मामले में पुलिस ने दो अज्ञात बाइक सवार युवकों पर केस दर्ज किया है। पुलिस बाइक नंबर के आधार पर आरोपियों की तलाश कर रही है। अजय ने बताया कि, रात में करीब साढ़े 10 बजे मैं कनाड़िया बायपास स्थित वाइन शॉप पर शराब खरीदने आया था। यहां पर भीड़ हो रही थी। काउंटर के पास ही दो लड़के खड़े थे। जो शराब ले रहे थे। उन्होंने पहले शराब लेने की बात पर कहासुनी की। इसके बाद बाहर की तरफ आकर विवाद करने लगे। कुछ देर बाद एक युवक ने चाकू निकाला और हमला कर दिया। पहला वार पेट पर, दूसरा पैर और तीसरा हाथ पर किया। इसके बाद बदमाश वहां से बाइक लेकर भागने लगे। कुछ लोगों ने उनका पीछा भी किया, लेकिन वो फरार हो गए।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म

पत्नी की मौत के बाद किराये का फ्लैट दिलाकर शोषण, पुलिस ने किया मामला दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। कनाड़िया पुलिस ने शादीशुदा महिला की शिकायत पर एक व्यक्ति के खिलाफ रेप का मामला दर्ज किया है। पीड़िता ने शिकायत की है कि शादी का झांसा देकर आरोपी कई साल से उसका शोषण कर रहा है। वह अपने पति से अलग रहती है जबकि आरोपी की पत्नी का देहांत हो चुका है।

शादी का झांसा देकर किया दुष्कर्म

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 33 साल की महिला की शिकायत पर राजेश पुत्र रामेश्वर बारोड निवासी ग्राम कनाड़िया के खिलाफ रेप का केस दर्ज किया है। पीड़िता ने बताया कि वह निजी अस्पताल में हाउस कीपिंग का काम करती है। इसके पहले वह ऑनलाइन कंपनी में काम करती थी। जहां 2016 में राजेश से उसकी पहचान हुई, 25 जुलाई 2022 को राजेश की पत्नी का देहांत हो गया। राजेश ने बताया कि उसे 2 बच्चों की देखरेख करना पड़ती है। साथ ही कहा कि वह भी बच्चों के साथ अलग रहती है तो वह उससे शादी कर सकता है। जिससे उसे पत्नी मिल जाएगी और दोनों का घर बस जाएगा। इसके बाद एक फ्लैट किराये से दिलाया। यहां भी कई बार संबंध बनाता रहा और शादी को लेकर टालमटोल करता रहा। आखरी बार 25 अगस्त 2024 की शाम को राजेश फ्लैट पर आया और शादी की बात कही तो वह नाराज होकर धमकी देकर चला गया। डर के कारण उसके खिलाफ शिकायत नहीं की। राजेश ने फ्लैट पर आना बंद कर दिया, जिसके बाद थाने में शिकायत की है।

लालच देकर दिव्यांग के साथ कुकर्म

एक मानसिक दिव्यांग के साथ कुकर्म करने का मामला सामने आया है, पिता की शिकायत पर गांधीनगर पुलिस ने पड़ोसी युवक लखन पटेल के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। मासूम के पिता ने बताया कि वह18 अक्टूबर को काम से गया था। वही बच्चे की मां भी कही चली गई थी। उसका बेटा जो मानसिक रूप से दिव्यांग है। उस समय घर में अकेला था।

दीपावली से पहले ऑटोमोबाइल सेक्टर में बूम

पुष्य नक्षत्र और धनतेरस पर वाहन खरीदने के लिए सर्वाधिक बुकिंग

इंदौर में अब तक 31.82 लाख कुल वाहनों की बुकिंग हुई

इनमें 5.46 लाख कार और 21.35 लाख दोपहिया शामिल

इंदौर(एजेंसी)। दीपावली से पहले ही बाजार में खरीदी का उल्लास दिखाई देने लगा है। रियल एस्टेट के बाद सबसे ज्यादा खरीदी-बिक्री आटोमोबाइल सेक्टर में हो रही है। इंदौर मध्य प्रदेश का ऑटोमोबाइल का गढ़ है और यहां पूरे प्रदेश से लोग वाहन खरीदने पहुंच रहे हैं। इससे शहर में ऑटोमोबाइल सेक्टर में जबरदस्त उछाल देखा जा रहा है। आसान फाइनेंस की सुविधा और नए-नए माडलों के अलावा आकर्षक उपहार ने दीपावली के उत्साह को बढ़ा दिया है। पुष्य नक्षत्र और धनतेरस के लिए लोग बुकिंग करवा रहे हैं। सर्वाधिक वाहन इन्हीं दो दिन बिकेंगे।

दीपावली के लिए सबसे ज्यादा बुकिंग

इंदौर जिले में परिवहन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 31 लाख से अधिक वाहन रजिस्टर्ड हैं। इसमें 21 लाख से अधिक दोपहिया और साढ़े पांच लाख चार पहिया वाहन हैं। अक्टूबर माह में 14 हजार से अधिक वाहन अभी तक रजिस्टर्ड हो चुके हैं। दीपावली पर सर्वाधिक वाहनों की बुकिंग है। 24 अक्टूबर को पुष्य नक्षत्र और 29 अक्टूबर को धनतेरस पर सर्वाधिक वाहनों की बुकिंग इंदौर के शोरूमों पर हुई है। कई मॉडल में लंबी वेटिंग है, तो कई मॉडल में पसंद के कलर नहीं मिल पा रहे हैं। हर्ष हुंडई के मैनेजर मुकेश वैष्णव का कहना है कि विगत वर्ष की अपेक्षा इस बार ग्राहकों का रुझान कार सेगमेंट में रोवस्ट ग्रीन कलर और सनरूफ मॉडल में सर्वाधिक है। कम कीमत वाले सेगमेंट में भी कंपनियों ने सनरूफ मॉडल लांच किए हैं।

20 प्रतिशत का उछाल- ऑटोमोबाइल सेक्टर के जानकारों का कहना है कि गत वर्ष की अपेक्षा इस बार दीपावली पर 15 से 20 प्रतिशत वाहनों की बिक्री में उछाल रहेगा। पुष्य नक्षत्र के विशेष संयोग के कारण लोग इस दिन अधिक वाहनों की बुकिंग करवा रहे हैं। धनतेरस की तरह पुष्य नक्षत्र पर सर्वाधिक वाहनों की बिक्री होगी।

दीपावली ऑफर भी लुभा रहे- वाहन निर्माता कंपनियों द्वारा ग्राहकों को विभिन्न मॉडल पर कई तरह के आकर्षक उपहार दिए जा रहे हैं। कहीं कैशबैक, कहीं डाउन पेमेंट में कमी, तो कहीं वाहन की एसेसरीज में छूट दी जा रही है। कंपनियों ने अपने कई मॉडल के दाम दीपावली ऑफर में कम किए हैं।

संपादकीय

बर्फ पिघली पर सतर्कता जरूरी

रूस में हो रहे ब्रिक्स सम्मेलन के पहले भारत और चीन के बीच रिश्तों की बर्फ कुछ पिघली है तो यह अच्छी बात है। बताया जा रहा है कि पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर 2020 की स्थिति बहाल होगी। हालांकि चीन इस समझौते का कितना पालन करेगा, यह देखने की बात है। अनुभव यह है कि चीन कहता कुछ है और करता कुछ है। लिहाजा वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी एलएसी पर सैनिकों की पेट्रोलिंग को लेकर हुए द्विपक्षीय समझौते को लेकर भारत को सतर्क रहना होगा। क्योंकि चीन की किसी भी बात पर पचास फीसदी भरोसा करना भी कठिन है। जो समझौता हुआ बताया जा रहा है कि उस पर अमल कितनी प्रामाणिकता के साथ होता है, यह भी देखने की बात है। अलबत्ता रूस में हो रहे दो दिनी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रवानगी के पहले देश के लिए यह अच्छी खबर है। सोमवार को भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पिछले कई हफ्तों से भारत और चीन के बीच राजनयिक और सैन्य स्तर पर हुई वार्ताओं का ये नतीजा है कि 'डिसएंगेजमेंट' पर समझौता हुआ। हालांकि इस समझौते से जुड़ी विस्तृत जानकारी अभी नहीं दी गई है और चीन का कोई बयान भी नहीं आया है, लेकिन कुछ जानकार इसे संबंधों को सामान्य करने की ओर एक अहम कदम मान रहे हैं। भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने भी एक निजी चैनल पर कहा कि साल 2020 में भारत के सैनिक चीन से लगी सरहद पर जहाँ तक पेट्रोलिंग करते थे, वहाँ फिर से कर पाएंगे। उन्होंने कहा, 'तनाव कम करने के लिए भारत और चीन के बीच वार्ता पूरी हो चुकी है। आपसी सहमति पर दोनों पक्ष पहुंचे हैं। आने वाले समय में और जानकारियां सामने आएंगी। यह एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है लेकिन इसके पूरे असर का आकलन करना जल्दबाज़ी होगी। हमें इंतज़ार करना होगा।' गौरतलब है कि लद्दाख के गलवान में गश्त करते समय भारत और चीन के जवानों में हिंसक झड़प हुई थी, जिसमें भारत के 20 सैनिक शहीद हुए थे। चीन के भी कई सैनिक मारे गए थे, जिनकी संख्या उसने कभी बताई नहीं। इस झड़प में निहत्थे होते हुए भी भारतीय सैनिकों ने चीनियों को तगड़ा सबक सिखाया था। उसके बाद दोनों देशों के सम्बंध खराब होते चले गए। भारत में चीनी सामान का बहिष्कार शुरू हो गया। कई चीनी कंपनियों पर भारत सरकार ने प्रतिबंध लगा दिए। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय बातचीत पर भी विराम लग गया। इसके बाद भी इस मसले को सुलझाने के सैनिक और कूटनीतिक बातचीत का जो रास्ता अपनाया गया, उससे समस्या का कुछ समाधान होने की पूरी संभावना दिख रही है। यद्यपि इससे यह निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी कि चीन भारत के साथ अपने सीमा विवाद का कोई स्थायी हल निकालने के लिए राजी हो गया है। वो कोई न कोई खुड़पेंच करता ही रहेगा। वह लद्दाख और भारत के अरूणाचल को अपना हिस्सा बताता रहा है, जो भारत को कभी मंजूर नहीं होगा। भारत इसे चीन का विस्तारवाद मानता है। इसके बाद भी अगर चीन कुछ नरम पड़ा है तो इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। पहला तो आर्थिक है। चीन की अर्थव्यवस्था डावांडोल हो रही है, ऐसे में भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था के साथ सम्बंध सुधारने में चीन को अपने हित दिख रहे हों। दूसरे, चीन नहीं चाहता कि भारत अमेरिका के ज्यादा करीब जाए। इस समझौते के बाद अगर दोनों देशों के बीच सौहार्द्र का कोई दरवाजा खुलता है तो यह शुभ संकेत ही होगा, क्योंकि आप पड़ोसी से हमेशा दुश्मनी कायम नहीं रख सकते।

नजरिया

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

जहरीली होती हवा से गहराता सांसों का संकट

दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में अभी दीपावली आने में कुछ दिन है, उससे पहले ही जहरीली हवा एवं वायु प्रदूषण से उत्पन्न दमघोटू माहौल का संकट जीवन का संकट बनने लगा हैं और जहरीली होती हवा सांसों पर भारी पड़ने लगी है। एयर क्वालिटी इंडेक्स यानी एक्यूआई बहुत खराब की श्रेणी में पहुंच चुका है। दिल्ली में औसत एक्यूआई 293 पहुंच गया है। दिल्ली के अनेक क्षेत्रों में यह अभी से 300 पार जा चुका है। अतीत का अनुभव बताता है कि आने वाले दिनों में यह और बढ़ेगा। बढ़ते वायु प्रदूषण से जनता की सांसों पर गहराते संकट के समाधान के लिए सरकार के पास विभिन्न चरणों में लगाए जाने वाले प्रतिबंधों के अलावा कोई योजना नजर नहीं आती। दिल्ली सरकार जो भी तर्क दें, पर हकीकत यही है कि लोगों का दम घुटेगा, बच्चों एवं बुजुर्गों के सामने बड़ा संकट खड़ा होगा, अगर दिल्ली सरकार सचमुच इससे पार पाने को लेकर गंभीर नहीं हैं, वह गंभीर होती तो पहले से कोई ठोस योजना बनाती। दिल्ली के वायु प्रदूषण एवं हवा के जहरीले होने में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा जलाई जाने वाली पराली का बड़ा योगदान बताया जाता है। उससे निपटने के प्रयासों के दावे भी राज्य सरकारों द्वारा किए जाते हैं पर वांछित परिणाम नजर नहीं आते। वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए बना आयोग भी जिम्मेदारी के निर्वाह में नाकाम नजर आता है।

प्रश्न है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रही दिल्ली को कोई समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती। सरकारें एवं राजनेता एक दूसरे पर जिम्मेदारी ठहराने की बजाय समाधान के लिये तत्पर क्यों नहीं होते? वैसे प्रदूषण कम करने और दिल्ली सहित देश के अन्य महानगरों-नगरों को रहने लायक बनाने की जिम्मेदारी केवल सरकारों की नहीं है, बल्कि हम सबकी है। हालांकि लोगों को सिर्फ एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी है, एंटीडस्ट अभियान भी निरन्तर चलाया जाना चाहिए। लोगों को खुद भी पूरी सतर्कता बरतनी होगी। लोगों को खुली जगह में कूड़ा नहीं फैंकना चाहिए और न ही उसे जलाया जाए। वाहनों का प्रदूषण लेवल चैक करना चाहिए। कोशिश करें कि हम निजी वाहनों का इस्तेमाल कम से कम करें और सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें। प्रदूषण से ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा-सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। क्षण-क्षण अग्नि-परीक्षा देता है। पर हां! अग्नि परीक्षा से कोई अपने शरीर पर फूस लपेट कर नहीं निकल सकता।

सुप्रीम कोर्ट राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण को लेकर कठोर टिप्पणियां करने के साथ सरकार को कठोर एवं प्रभावी कदम उठाने के लिये जागरूक करती रही है। हाल ही सुप्रीम कोर्ट ने पराली जलाने से रोकने में पंजाब सरकार की नाकामी पर सख्त टिप्पणी भी की। पंजाब और दिल्ली, दोनों ही राज्यों में आम आदमी पार्टी की सरकारें हैं, इसलिए यह आप और भाजपा के बीच राजनीतिक आरोप प्रत्यारोप का मुद्दा भी बनता रहता है। ध्यान रहे कि पंजाब और दिल्ली के बीच स्थित राज्य हरियाणा में भाजपा की सरकार है। उत्तर प्रदेश में भी भाजपा सरकार है, जिसके पश्चिमी क्षेत्र के किसानों पर पराली जलाने का आरोप लगता रहता है। आम आदमी की सेहत ही नहीं, जीवन से भी जुड़े इस जानलेवा मुद्दे पर राजनीति नहीं, बल्कि ठोस समाधान की राह निकलनी चाहिए। हमारे राजनीति दल संवेदनहीन नहीं बल्कि संवेदनशील बने। दीपावली पर आतिशबाजी न हो, इसके लिये व्यापक प्रयत्न किये जाये। क्योंकि पटाखे जलाने से न केवल बुजुर्गों बल्कि बच्चों के जीवन पर खतरनाक प्रभाव पड़ने और अनेक रोगों के पनपने की संभावनाएं हैं। आम जनता की जिंदगी से खिलवाड़ करने वाली पटाखे जलाने की भौतिकतावादी मानसिकता को विराम देना जरूरी है।

प्रदूषण मुक्त पर्यावरण की वैश्विक अभिधारणा को मूर्त रूप देने के लिये इको फ्रेंडली दीपावली मनाने की दिशा में पिछले कुछ सालों में कई पायदान हम ऊपर चढ़े हैं, एक सकारात्मक वातावरण बना। लेकिन पटाखों से ज्यादा खतरनाक हैं पराली का प्रदूषण। पराली आज एक राजनीतिक प्रदूषण बन चुका है।

तमाम बंदीशों एवं चेतावनियों के दीपावली की रात आतिशबाजी जमकर होती है, इसके कारण पिछले साल अगले दिन वायु प्रदूषण 999 के बेहद खतरनाक स्तर पर पहुंच गया था। यह आम आदमी की सेहत, खासकर बुजुर्गों और बच्चों के लिए कितना खतरनाक साबित हो सकता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 401 से 500 तक के एक्यूआइ को ही 'गंभीर' एवं खतरनाक माना जाता है। वायु प्रदूषण से जुड़े आंकडे हमें बार-बार सतर्क एवं सावधान करने के साथ डराते भी है। यह डराने वाला ही आंकड़ा है कि भारत में हर साल वायु प्रदूषण से 20 लाख मौतें होती हैं। देश में होने वाली मौतों का यह पांचवां बड़ा कारण है। दिल्ली-एनसीआर के वायु प्रदूषण में पराली और पटाखों की ही तरह वाहनों एवं भवन-निर्माण से जुड़ा प्रदूषण भी खतरनाक होता है। भू-विज्ञान मंत्रालय के एक रिसर्च के अनुसार वायु निर्माण में 41 प्रतिशत हिस्सेदारी वाहनों की रहती है। भवन निर्माण आदि से उड़ने वाली धूल 21.5 प्रतिशत के दूसरे स्थान पर है। दिल्ली परिवहन विभाग के आंकड़े के मुताबिक पिछले 30 साल में वाहन और उनसे होने वाला प्रदूषण तीन गुणा बढ़ गया है। फिर भी सार्वजनिक यातायात व्यवस्था को बेहतर और विश्वसनीय बनाने की दिशा में कुछ खास नहीं किया गया।

इस विषम एवं ज्वलंत समस्या से मुक्ति के लिये हर राजनीतिक दल एवं सरकारों को संवेदनशील एवं अंतर्दृष्टि-सम्पन्न बनना होगा। क्या हमें किसी चाणक्य के पैदा होने तक इन्तजार करना पड़ेगा, जो जड़ों में मठ्ठा डाल सके।...नहीं, अब तो प्रत्येक राजनीतिक मन को चाणक्य बनना होगा। तभी विकराल होती वायु प्रदूषण की समस्या से मुक्ति मिलेगी। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार दिल्ली के प्रदूषण में पराली के धुएं की हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत के आसपास है। अभी से हर दिन पराली जलाने की घटनाएं दर्ज होने लगी है। क्या इसे रोकना वाकई इतना कठिन है? आखिर दिल्ली, पंजाब के साथ केंद्र सरकार इसके लिए क्या कर रही है कि किसान पराली न जलाएं? सच यह है कि इसके लिए कोई प्रभावी कोशिश हो ही नहीं रही है। किसानों से बात करने का साहस कोई भी सरकार नहीं दिखा रही है। ऐसा माहौल बना दिया गया है, मानो खेती के नाम पर कुछ भी करने की छूट है। इसका कारण राजनीतिक ही है। कोई किसान है, इसका यह अर्थ नहीं कि उसे वातावरण को दमघोंटू बनाने एवं लोगों के जीवन को संकट में डालने का अधिकार है।

अभी से दिल्ली की आबोहवा बच्चों और बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से खतरनाक होने लगती है। दिल्ली की हवा में उच्च सांद्रता है, जो बच्चों को सांस की बीमारी और हृदय रोगों की तरफ धकेल रही है। शोध एवं अध्ययन में यह भी पाया गया है कि यहां रहने वाले 75.4 फीसदी बच्चों को घुटन महसूस होती है। 24.2 फीसदी बच्चों की आंखों में खुजली की शिकायत होती है। सर्दियों में बच्चों को खांसी की शिकायत भी होती है। बुजुर्गों का स्वास्थ्य तो बहुत ज्यादा प्रभावित होता ही है। सर्दियों के मौसम में हवा में घातक धातुएं होती हैं, जिससे सांस लेने में दिक्कत आती है। हवा में कैडमियम और आर्सेनिक की मात्रा में वृद्धि से कैंसर, गुर्दे की समस्या और उच्च रक्तचाप, मधुमेह और हृदय रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसमें पराली के प्रदूषण से घातकता कई गुणा बढ़ जाती है। पटाखों का प्रदूषण उससे भी घातक है। 300 से अधिक एक्यूआई वाले शहरों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहने वाले सांस के रूप में जहर खींचने को क्यों विवश है, इसके कारणों पर इतनी बार चर्चा हो चुकी है कि उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं।

दृष्टिकोण

डॉ. सत्येन्द्र किशोर मिश्र

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति

भारतीय ज्ञान परंपरा (आईकेएस) आध्यात्म एवं दर्शन, बौद्धिकता एवं तर्क तथा विज्ञान एवं कला को समाहित करती उन्नत ज्ञान प्रणाली है। ज्ञान का मूल उद्देश्य भय से मुक्ति है। ज्ञान उस अधूरेपन को दूर करता है जिससे भय उत्पन्न होता है। स्वयं को जाने बगैर ज्ञान अधूरा रहता है, जिससे दृष्टि अधूरी रहती, जगत के प्रति व्यवहार भी अधूरा रहता है, यही दुःखों का मूल कारण है। दूसरों को जानने से पूर्व आवश्यक है कि स्वयं को जाने, उपनिषद् स्वयं का बोध कराते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) आईकेएस की बुनियाद पर वर्तमान शिक्षा को दुरूस्त करेगी। विकसित भारत के सपने को साकार करने हेतु शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूरी है।

आईकेएस में पीढ़ियों से चली आ रही संमृद्ध ज्ञान परंपरा है, इसमे प्रमुख है वैदिक साहित्य, जो भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का आधार है। वैदिक साहित्य दर्शन, नैतिक मूल्य एवं व्यावहारिकता के साथ-साथ ज्ञान की अंतर्दृष्टि प्रदान कर साहित्य, कला, संगीत, वास्तुकला और शासन सहित जीवन के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित करता रहा है। वैश्विक स्तर पर बदलाव तथा विज्ञान-प्रौद्योगिकी में प्रगति से निःसंदेह भारत ने अनेक आर्थिक, वाणिज्यिक, प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सीमाएं लांघी हैं, परन्तु साथ ही संस्कृति तथा परंपरा से अलगाव और मूल्यों में गिरावट भी स्पष्ट है, वर्तमान शिक्षा प्रणाली समाज से कट चुकी है।

उपनिषदों की ज्ञानमीमांसा तथा तत्वमीमांसा सार्वभौमिक चेतना का ज्ञान है। भारतीय षड्दर्शन आत्मचिंतन का अद्वितीय दृष्टिकोण हैं। न्यायदर्शन तर्क और ज्ञानमीमांसा पर केंद्रित है, जबकि वैशेषिक दर्शन परमाणुओं के संयोजन विश्लेषण के माध्यम से प्रकृति को समझता है। सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत दर्शनिक चिंतन को नयी उॅंचाईयों पर ले गये। श्रीमद्भगवद्गीता आध्यात्मिक अवधारणाओं का समन्वय कर उद्देश्यपूर्ण जीवनदर्शन प्रस्तुत करता है। भारतीय गणितज्ञों ने गणित में महत्वपूर्ण खोज की, शून्य की उत्पत्ति ने गणित में क्रांति ला दी, जिससे दशमलव का विकास हुआ। सुश्रुत संहिता चिकित्सा और सर्जरी का अद्वितीय ग्रंथ है। आयुर्वेद शरीर, मन और आत्मा के मध्य संतुलन पर ध्यान केंद्रित कर समग्र कल्याण पर जोर देता है। प्राचीन उपचार एवं आहार पद्धति आधुनिक वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों का आधार है।

व्यक्तित्व से जो अभिव्यक्त होता है, उसके पीछे महान सत्ता विद्यमान होती है जिसका व्यक्ति को बोध नहीं रहता, इसे समझने हेतु मनन और निदिध्यासन अर्थात् सतत् चिन्तन और अभ्यास आवश्यक है। मननशीलता सच्चे मानव का निर्माण करती है, ऋग्वेद में कहा गया है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो, मनुष्य बनने के लिए मनन आवश्यक है, केवल मनुष्य ही नहीं अपितु मनुष्य बनकर दिव्यता का सृजन करो। कोई भी विचार जो व्यक्ति के चिन्तन प्रक्रिया को प्रतिबंधित करे वह मानवीय नहीं हो सकता। आईकेएस मनुष्य की सोच को परिष्कृत करती है न कि प्रतिबंधित, इसमें अध्ययन, मनन और निदिध्यासन का विधान है। ज्ञान प्राप्ति हेतु मस्तिष्क के प्रशिक्षण और सोचने की प्रक्रिया आवश्यक है। व्यक्ति को सत्य श्रवण तथा चिंतन करना होता है, ताकि वह सत्य को मात्र शब्द न समझे अपितु जीवन में भी उतार सके, यही आत्मसाक्षात्कार है।

आईकेएस समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यों पर जोर देती है। शिक्षक की समाज में प्रतिष्ठा थी तथा शिक्षा स्वतंत्र थी, जिसका अंतिम नियामक शिक्षक ही होता था। शिक्षा की व्यवस्था टुकड़ों में नहीं, अपितु बाल्यावस्था से आरंभ होकर जीवनपर्यन्त थी। मानव तथा समाज के समग्र विकास हेतु आईकेएस में शिक्षा दृष्टि धार्मिक एवं आध्यात्मिक है, 'धर्मो हि तेषाम् अधिको विशेषः' एक धर्म ही मानव को पाशविकता से अलग करता है। समग्र विकास हेतु पंचकोषात्मक विकास की दृष्टि जरूरी समझता है। मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, मानसिक अवसाद का सामना करने हेतु समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिससे मानव और प्रकृति के मध्य सामंजस्य स्थापित हो सके।

ज्ञान अपने होने के लिए प्रमाण, अनुभूति और बोध की अपेक्षा रखता है। शुद्ध ज्ञान बोध स्वरूप है, लेकिन संप्रेषण अथवा व्यवहार में उतारने की प्रक्रिया में वह कथाओं में परिवर्तित हो जाता है। कथाएं ज्ञान की संवाहक तो हो सकती हैं, लेकिन ज्ञान का प्रमाण नहीं, ज्ञान का प्रमाण तो उसका बोध एवं व्यवहार ही होता है। समाज कथाएं अपने उद्देश्य और स्वार्थ के लिए गढ़ता हैं, लेकिन ज्ञान नहीं गढ़ा जा सकता। कुछ समाज में बोध का नहीं अपितु कथाओं का महत्व होता है, ऐसे समाज मात्र आख्यानो पर ही आश्रित होते हैं, कथाएं ही अन्तिम सत्य है, भले ही बोध कुछ भी हो। ज्ञान आधारित समाज अपने ज्ञान को समझाने के लिए कथाओं का प्रयोग करता है, लेकिन उसका अंतिम लक्ष्य बोध और व्यवहार है। कथाओं पर अवलम्बित समाज बोध को प्रतिबंधित कर स्वार्थवश नित नयी कथाएं गढ़ता रहता है, यही नैरेटिव है। नैरेटिव से स्वार्थ सिद्ध हो सकता है, परन्तु ज्ञान की सिद्धि बोध से ही होती है। भारत ज्ञान के बोध स्वरूप पर ही विश्वास करता रहा है। यहाँ कथाएं भी बोध को प्रकट करने का माध्यम मात्र हैं, लेकिन औपनिवेशिक मानसिकता ने भारत में कथाओं को स्वार्थ के अनुकूल गढ़ने का प्रयत्न किया।

विश्वविद्यालय जब ज्ञान साधना के स्थान पर निहित स्वार्थ के केन्द्र बन जाते हैं तब वे राष्ट्र चेतना जागृत करने में असफल रहते हैं। कुलपति को कुलगुरु कह देने मात्र से शायद ही कुछ बदलेगा, वैसे भी कुलपति आईकेएस के लिए पराया शब्द भी नहीं है। वस्तुतः कुलपति और कुलगुरु दो अलग भाव एवं व्यवहार व्यक्त करते हैं। वाल्मीकि रामायण में कालिंजर के कुलपति का उल्लेख है, रघुवंशम् में वशिष्ठ तथा अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कण्व कुलपति थे। भरद्वाज लोकविख्यात कुलपति थे, नालंदा में धर्मपाल तथा शीलभद्र कुलपति ही थे। शिक्षा में परिवर्तन नीति, नीयत और नियम में पवित्रता से होगा, न कि पदनाम परिवर्तन अथवा अवसर लाभ की प्रतिस्पर्द्धा से।

शिक्षा मनुष्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली सरकारी बाबू बनाने तक ही सीमित है, जिसका मकसद आत्मकेंद्रित जीविकोपार्जन केंद्रित व्यक्तिनिर्माण है, न कि वास्तविक क्षमता को निखारना। जीविकोपार्जन किसी की सर्वोच्च आकांक्षा कैसे हो सकती है? वर्तमान शिक्षा व्यक्ति की क्षमता को सीमित करती है, इसका समाधान आईकेएस में है। ईशावास्योपनिषद् में विद्ययामृतमश्नुते विद्या से अमरत्व प्राप्त करना बताता है तो सामाजिक सरोकारों हेतु सम्भूत्यामृतमश्नुते लोककल्याण से भी अमरत्व प्राप्त होता है।

भारतीय छात्रों को आईकेएस से अनभिज्ञ रखा गया। निःसंदेह, यही अंग्रेजों के हित में था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद भी यह गलत धारणा क्यों जारी रही? क्या भारत के पास दुनिया को देने लायक कुछ भी नहीं है? पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली ने आईकेएस को नजरन्दाज कर आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच, रचनात्मकता और उद्यमशीलता की भावना ही नष्ट कर दी। दुर्भाग्यवश मानसिकता आज भी नहीं बदली, भारत में पश्चिमीकरण और सांस्कृतिक अलगाववाद की बुराइयां बरकरार है, जिससे देश की प्रगति तथा गौरव बाधित है। आईकेएस का नारा तो लगाया गया, लेकिन इसकी चर्चा पश्चिम की कसौटी पर ही हुई। पाठ्यक्रमों में सार्थक परिवर्तन नहीं हो सका, क्या पढ़ना है और क्या पढ़ाना है? प्रश्न गौण रहा। बस, प्रयास रहा कि विश्वविद्यालयों को पश्चिम के मानक पर खड़ा कैसे किया जाए?

आईकेएस अद्वितीय अवश्य है, परन्तु अतिउत्साह में यह समझना कि समस्त ज्ञान-विज्ञान आईकेएस में ही हैं, अन्य ज्ञान परंपराएं सर्वथा बेकार है, बौद्धिकता के लिए घातक होगा। निःसंदेह आईकेएस की एक संमृद्ध विरासत है, इसे सामयिक संदर्भों में पुनर्प्रतिष्ठित करना भी जरूरी है, परन्तु अन्य ज्ञान परंपराओं को सत्यता तथा तार्किकता की कसौटी पर कसे बगैर, समग्रता में खारिज करना उचित नहीं होगा। ज्ञान-विज्ञान की कोई भी परंपरा यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कसौटी पर खरी हो तो उससे परहेज नहीं होना चाहिए। उपनिषद का सूक्त वाक्य 'आनोभद्राः ऋतवो यन्तु विश्वतः' तथा 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय' भी यही है।

जरूरत है आईकेएस के साथ फिर से जुड़ने, आत्मसात कर अनुकूलित करने की। वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में आईकेएस आधारित पाठ्यक्रमों को तैयार कर सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा हेतु प्रयास करना होगा। असल चुनौती आईकेएस को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तार्किकता की कसौटी पर कसने की जिससे यह भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को सार्थक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सके।

हे पार्थ ! तू 'मछली' की आंख नहीं 'कुर्सी' देख

कटाक्ष

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

यह समय का ही तकाजा रहा कि भारत में महाभारत हुई। अब तो महाभारत घर-घर होने लगी है। इस महाभारत के हर पौराणिक प्रसंग और दृश्य वर्तमान में भी कैसे प्रासंगिक हो रहे हैं, इन्हें देखकर महाभारत के रचनाकार वेद व्यास भी हैरान हैं। कथित तौर पर माना जाता है कि 5 हजार साल पहले महाभारत हुई थी और इतने सालों बाद भी महाभारत के पात्र किसी न किसी रूप में अपने आप को रिपीट कर रहे हैं। ज्यादा लंबी भूमिका न बनाते हुए मैं सीधे ट्रैक पर आता हूं। महाभारत कालीन द्रोपदी के स्वयंवर का दृश्य एक बार फिर कलयुग में मंचन किया जा रहा है। इसका मंचन कलयुगीन मजबूरी भी हो सकती है। यह मजबूरी सामाजिक कम राजनैतिक ज्यादा है, क्योंकि आज यह समझ पाना मुश्किल है कि देश में, समाज में, व्यक्ति में राजनीति है या राजनीति में ये सब। इस कलयुगीन भारत के 'कुरुक्षेत्र' में अभी महाभारत का समापन हुआ ही था कि अब सामुद्रिक महानगर में इसे दोहराए जाने की घोषणा हुई है। द्वापर युगीन महाभारत में अर्जुन मुख्य पात्र रहा। वह शायद आज होता तो निश्चय ही वह सत्ताधारियों के निशाने पर होता। जैसा वह इंद्रप्रस्थ (शायद आज की दिल्ली) में था। यह एक संयोग हो सकता है। वैसे संयोग से याद आया कि महाभारत और आज के भारत में संयोगों का बहुत महत्व रहा है। कोई संयोग से नेता बन जाता है तो कोई इंद्रप्रस्थ का महाराज। इसे आज की सोशल मीडिया युग में 'उड़कर लगना' भी कह सकते हैं। संयोग देखिए जो रथ पर सवार थे, वे आज वनवास भोग रहे हैं और जो सारथी थे, वे राज भोग रहे हैं। खैर, हमें क्या! हां तो मैं कह रहा था कि द्रोपदी के स्वयंवर में अर्जुन यानी कि पार्थ आज भी पहुंचे हैं। वैसे आज द्रोपदी को आप सत्ता की राज 'सुंदरी' मान सकते हैं। सत्ता के लिए आज भी स्वयंवर हो रहे हैं। पार्थ इस स्वयंवर में अपना निशाना साथ ही रहे थे कि पार्श्व से आवाज आई हे पार्थ! अब तू मछली की आंख नहीं कुर्सी देख। पार्थ ने अपनी गर्दन घुमाई और देखा पीछे कृष्ण मुस्करा रहे थे। पार्थ ने निशाना साधा और लक्ष्य भेद दिया। अब पार्थ राज 'सुंदरी' के साथ चल दिए। उसने लक्ष्य साधकर उसका वरण जो कर लिया था। इधर, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, दुःशासन आदि ने चौपड़ बिछाई और खेल शुरू हो गया। धर्मराज, अर्जुन, भीमसेन सहित पांडव इनके जाल में तब भी फंसे थे और अब भी फंस रहे हैं और द्रोपदी राज सुंदरी से जन सुंदरी हो गई है और उसका हर बार चीरहरण ही हो रहा है। कृष्ण तब असहाय नहीं थे अभी असहाय हैं। इंद्रप्रस्थ के 'महाराज' को हर राज्य में केवल अब कुर्सी ही नजर आ रही है। कुरुक्षेत्र के बाद अब यह कारवां अन्य जगह पहुंच गया है। इधर, पार्थ फिर मैदान में है। उसे फिर से गीता का ज्ञान दिया जा रहा है। इस बार उसका मजमून अलग है। अब अर्जुन भी सोशल मीडिया से ज्ञान प्राप्त कर रहा है। सोशल मीडिया के हर प्लेटफार्म पर ज्ञान का प्रवाह खतरे के निशान से ऊपर है। लक्ष्य वही है लेकिन, अब मछली गायब है और निशाने पर कुर्सी टंगी है। अभिमन्यु और कर्ण पहले की तरह घिरे हुए हैं और गुरु द्रोण 'अश्वत्थामा' को लेकर चिंतित हैं और भीष्म रूपी जनता की आत्मा सरसैया पर लेटकर यह सब देख रही है। फिर एक लाक्षागृह होने जा रहा है। अर्जुन निशाना साधे खड़ा है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रदीप उपाध्याय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एक साहित्यकार की व्यथा-कथा

विमान उड़ान भरने ही वाला था किन्तु पास बैठा युवक उन्हें कुछ भाव ही नहीं दे रहा था जबकि बड़ी देर तक अपनी किताब को यूं ही उलट-पुलटकर उसका ध्यान आकर्षित करने की नाकाम कोशिश के बाद उन्हें स्वयं ही बोलना पड़ा- 'क्या तुम मुझे जानते हो! मेरी अभी तक सैकड़ों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं, कई तो बेस्ट सैलर रही हैं. और जहाँ तक पुरस्कार /सम्मान की बात है, उनकी तो गिनती ही नहीं है.'

'यह तो बहुत अच्छी बात है. लेकिन माफ़ कीजिएगा मैंने कभी आपका नाम नहीं सुना! वैसे किस नाम से लिखते हैं आप! आपका लिखा कहीं पढ़ने में भी नहीं आया.वैसे आप क्या लिखते हैं. मेरा मतलब है कि किस विषय पर,किस विधा में! क्या किताबों के अलावा भी कहीं और भी आपका लेखन छपता रहता है!' उसने बड़ी बेतक़्लुफ़ी से कहा. उसकी बातों में शरारत की झलक दिखाई दे रही थी.

उस सहयात्री के प्रश्नों से वे बहुत असहज हो चुके थे. उन्हें लगा कि किस मनहूस से बातें शुरू कर दी किन्तु मजबूरी भी थी. जिस तरह से घर का पड़ोसी कोई म्लेच्छ हो जाए तो उनसे भी निभाना पड़ता है ठीक उसी तरह विमान में जो भी पड़ोसी हो जाए उसको निभाना ही पड़ता है. इसीलिए खुद को सहज करते हुए चेहरे पर बनावटी मुस्कान लाते हुए कहने लगे- 'बरखुरदार,कुछ साहित्य - वाहित्य भी पढ़ते हो या बस डिग्री लेकर कमाने-धमाने में ही जिंदगी तमाम कर रहे हो.'

'ऐसा नहीं है श्रीमान जी,साहित्य में तो रूचि रही है.जब भी समय मिलता है तो उपन्यास, कहानियां पढ़ लेता हूँ.'

'यह तो अच्छी बात है. अभी तक किसको पढ़ा है और किस साहित्यकार ने ज्यादा प्रभावित किया है.'

'नाम गिनाने को तो बहुत से हैं लेकिन मुझ पर किसी एक ने कभी स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ा.'

'ऐसा कैसे हो सकता है!साहित्य अपना प्रभाव तो छोड़ता ही है.'

'मुझे जासूसी और रोमांटिक नॉवेल ही पसंद हैं और मैं फ्रेंच और इंगलिश नॉवेल ही प्रिफर करता हूँ.'

'तब क्या हिंदी का साहित्य तुमने पढ़ा ही नहीं!'

'नो सर, मेरी हिंदी अच्छी नहीं है.वैसे भी मैंने कांवेंट स्कूल में ही शिक्षा पाई है और मैंने सुना है कि हिंदी में ज्यादा उत्कृष्ट साहित्य नहीं रचा जा रहा है.लोग कहते भी हैं कि लिखने वाले बहुत हैं, पढ़ने वाले कम.'

'फिर तो तुम्हारा साहित्यिक ज्ञान शुन्य ही है!'

'क्या बात कर दी सर! मैं जिन्हें पढ़ता हूँ, उनका तो आपने नाम भी नहीं सुना होगा'.

'आर्थर कॉनन डॉयल, अर्ल स्टेनली गार्डनर, अगाथा क्रिस्टी से लेकर जॉन ल कार तक बड़े प्रतिष्ठित जासूसी कथा लेखक हुए हैं,जिनके जासूसी उपन्यास मैंने कई बार पढ़े हैं और नोरा रॉबर्ट्स का तो कहना ही क्या है,उनके रोमांटिक उपन्यास! गजब!सौ से भी ज्यादा उपन्यास हैं उनके. क्या आपने उन्हें पढ़ा है!'

विमान उड़ान भर चुका था और उनका भी मन इस वार्तालाप से उठ चुका था. अब उनके स्वर में झल्लाहट उभर आयी थी,वे बोले- 'जब तुम जैसे लोग ही अपनी मातृभाषा का अहित कर रहे हैं तब दूसरों को क्या दोष दें.'

'ठीक है सर दोषी हम ही हैं लेकिन एक बात बताइए कि क्या आपके बच्चों ने हिंदी मीडियम स्कूल में पढाई की है या वे भी इंगलिश मीडियम स्कूल में पढ़ाई कर विदेशों में फुर्र हो गए हैं.'

इस बार उन्होंने अपने सहयात्री के प्रश्न का जवाब नहीं दिया और आंखें बंद कर निद्रामग्न होने का ढोंग शुरू कर दिया.

साहित्य की दुनिया

विवेक कुमार मिश्र

साहित्य की नागरिकता वैश्विक धरातल पर होती है

साहित्य की दुनिया भी निराली होती है। यहां तरह तरह से सत्य को कहने की कोशिश की जाती है। बहुत बार अपने सत्य को दूसरे पर आरोपित कर बात कही जाती है तो दूसरे के सत्य को अपने ऊपर इस तरह घटाया जाता है कि लगता ही नहीं कि आप उसमें शामिल नहीं हैं। इस तरह साहित्य की घटनाएं और साहित्य के प्रसंग अनेकशः ऐसे आते हैं कि दूर दूर तक घटमान दुनिया से उनका लेना-देना उस तरह नहीं दिखता कि आप पहचान सके कि हां यहां यहीं सत्य है । जो साहित्य में घटित होता है वह साहित्य में ही घटित होता है और दिखता है लोगों के मन में संसार में और जगत में घटते हुए । साहित्य कुछ भी इस तरह नहीं आता कि आप दो और दो चार कह सकें साहित्य गणित नहीं है, जीवन है और जीवन के रहस्य की तरह ही साहित्य के रहस्य भी होते हैं जो समझ में आ जायें तो तुरंत समझ में आ जायें और न आयें तो पूरा जीवन भी कम पड़ जाएं । साहित्य के पाये तखत के पाये की तरह मजबूत होने चाहिए । एक समय कई सारे लोग बैठ जाएं तो भी साहित्य के तखत पर कोई फर्क नहीं पड़ता है । साहित्य आपके भीतर के स्थाई भाव से जीवित होता है । साहित्य के लिए क्षणिक हर्ष-विषाद का अर्थ उस तरह नहीं होता जैसा कि आम तौर पर किया जाता है । साहित्य हर्ष-विषाद के रास्ते क्या घटित हो सकता है उसकी ओर संकेत करता है । वह हमें विचार करने के लिए छोड़ता है । आप साहित्य इसलिए नहीं पढ़ते कि मनोरंजन करना है या हवा में उड़ना है । साहित्य इसलिए पढ़ता है कि उससे संसार को समझने में मदद मिलती है। साहित्य आपको सीमित दुनिया से निकाल कर व्यापक समाज से जोड़ने का काम करता है। साहित्य की नागरिकता वैश्विक होती है... मनुष्यता बोध के भाव संसार भर में सब जगह एक से होते हैं । इसलिए साहित्य की दुनिया भी विज्ञान की तरह पूरे विश्व को अपने भीतर घटित होते देखती है । साहित्य मानव मन की अभिव्यक्ति का संसार है वहां वस्तु संसार को उस तरह जगह नहीं मिलती जैसा संसार में दिखता है । साहित्य के संसार में मन दशा व रस दशा व आनंद दशा के सूत्र छिपे होते हैं ।

साहित्य जीवन रहस्य को समझने से ही अपनी दुनिया को व्यापक बनाता है। साहित्य के संदर्भ इस तरह से कार्य करते हैं कि बातें संदर्भ काल में होते हुए भी कालांतर से आपको जोड़ देती हैं । यहां आप किसी एक कालखंड तक सीमित नहीं होते भूत वर्तमान और भविष्य सब साथ-साथ चलता रहता है और सबको ही घटते हुए देखना ही साहित्य का आनंद लोक है पर इस लोक में भी बहुत सारे लोग ऐसे आ जाते हैं कि उन्हें आनंदलोक की यात्रा कम ही समझ में आती है वे क्षणिक विषाद और क्षणिक आनंद के पालने में झूलने को ही जीवन का सही रूप मानते हैं और इसी हिसाब से कदम बढ़ाते रहते हैं । उन्हें साहित्य भी अपनी दुनिया में एक पूंजी निवेश की तरह भार परक क्रिया ही लगती है। इसीलिए बहुत बार ऐसे लोग भी मिलते हैं जिनके लिए साहित्य का अर्थ केवल बगल में किताब दबाकर घूमने जैसा ही होता है । उन्हें इससे कुछ लेना-देना नहीं होता कि किताब के भीतर क्या लिखा है उनका बस इतना प्रयोजन होता है कि किताब देखकर उन्हें पढ़ा लिखा माना जाये। इसके लिए पुस्तक का फ्लैप उलट पलट कर पुस्तक के बारे में समय समय पर

बुदबुदाते रहते हैं। साहित्य में बुदबुदाने का भी महत्व है। मान लिया जाता है कि आप कुछ न कुछ कर रहे हैं । कम से कम बुदबुदा तो रहे हैं और जब बुदबुदाते रहेंगे तो एक दिन खदबदायेंगे भी और खदबदाना साहित्य के हिसाब से बड़ा काम हो जायेगा । यदि आप साहित्य के रस में डूब जाएं तो साहित्य आपके माथे से टपकने लगता है और ऐसे लोग भी मिलते रहते हैं जिनके माथे से साहित्य भी टपकता है और पसीना भी पर कौन ज्यादा टपकता है पता नहीं चलता । इनका साहित्य से उस तरह से लेना देना नहीं होता कि आप कह सकें कि इनका साहित्य के साथ यहीं संबंध है । कार्य-कारण की श्रृंखला से दूर साहित्य की गति होती है । साहित्य में भी एक दूसरे को गढ्ढे में ढकेलने और गढ्ढे से निकालने की कथा रहती है । किसी पर टिका टिप्पणी ढ़ंग से कर दो तो वह न जाने कितना पहुंचा हुआ आदमी अपने को समझने लगता है और न करों तो उसे लगता है कि ये महाशय तो अपने को साहित्यकार मानेंगे ही नहीं। वैसे किसी भी ढ़ंग के साहित्यकार को किसी के मानने और न मानने का इंतजार कभी नहीं रहता । ढ़ंग का साहित्यकार अपने लिखे पर और अपने शब्द पर भरोसा करता है और उसे बराबर से यह लगता है कि अपनी बात अपने संदर्भ और अपनी उपस्थिति को स्वयं दर्ज कराना ठीक होगा । इसीलिए ढ़ंग के पायेदार साहित्यकार भूमिका लिखाने के चक्कर में नहीं पड़ते न ही ये सोचते कि उनके साथ कौन है या कौन नहीं है और किसे इधर-उधर की गोटी जोड़कर अपने साथ लाना है और कहां तक लाना है । वैसे भी यदि आप साहित्य जगत में काम कर रहे हैं तो थोड़ा मन से निराला भी बनिए, थोड़ा दौड़ भाग थोड़ा गणित, गुणा भाग से दूर रहते वास्तविक जिंदगी के ताप को महसूस करते करते कुछ रचते हैं तो वह आप के लिए और संसार की सेहत के लिए भी ठीक ही रहता है । आजकल और पहले भी ऐसा भ्रम बना रहता था कि फलां साहब आपको साहित्यकार बना देंगे। उनके पास में या बगल में बैठ जायेंगे तो मुझे भी बड़ा और पहुंचा हुआ साहित्यकार मानने में देर नहीं लगेगी। इसीलिए मक्खन की दुकान पर मक्खन भले न मिले पर साहित्य की जहां दुकान होती है वहां इतना मख्खन होता है कि आप जैसा चाहो वैसा ठेका मिल जायेगा । साहित्य में जितने भी रस होते हैं और हों सकते हैं उससे दो रस आगे का रस बताकर आपकी प्रशंसा भरी टिप्पणी कर दी जायेगी जिससे आप जब सड़क पर चलें तो कदम में मद भरा संसार दिखें । केवल मकान निर्माण हेतु ठेकेदार जी की जरूरत नहीं पड़ती जिंदगी के अन्य हिस्सों में भी ठेकेदार की सीधे सीधे जरूरत पड़ती ही पड़ती है। अब यदि आप साहित्य के क्षेत्र में कुछ करना चाहते हैं तो यहां भी कुछ न कुछ बड़े ठेकेदार मिल जायेंगे जो रास्ता बताने से लेकर साहित्य निर्माण की सामग्री और भूमिका के बारे में इस तरह बतायेंगे कि आपको इनकी विशेषज्ञता पर किसी तरह का शक न हो । देखते-देखते राष्ट्रीय महत्व के आदमी के रूप में आपको घोषित कर देंगे । अब जिसे कभी घर में ही महत्वपूर्ण जगह न मिली हो उसे राष्ट्रीय महत्व का आदमी घोषित कर दिया जाये उसके कंधों पर सभ्यता का भार लाद दिया जाएं तो भला सोचिए कि वह आदमी कहां जायेगा..... ? वैसे तो किसी को कोई कुछ नहीं बनाता एक ढेला की भी मदद कोई नहीं करता पर घोषित करने में जाता ही क्या है । किसी को भी महान कह दो अब वह महान बन जायें तो उसकी मेहनत और भाग्य का मामला है और नहीं भी बना तो आपने तो उसका भला सोचकर ही ऐसा कहा था। इसलिए इस तरह की बातों में किसी तरह का कोई खतरा नहीं होता और लोग एक दूसरे को महान घोषित इसलिए भी करते रहते हैं कि एक न एक दिन कोई उनको भी तो महान मानेगा । साहब महान होने के लिए महान जैसा दिखना भी पड़ता है ।

कायनात ही डंडा लिए खड़ी है !

प्रकाश पुरोहित

शाहरुख खान के साथ ही ऐसा होता होगा कि 'किसी को शिद्दत से चाहो तो पूरी कायनात साथ देने लगती है।' मेरे साथ तो, लगता है, कायनात डंडा लिए खड़ी रहती है कि ये काम तू करके दिखा। बरसों से मेरी यह हसरत रही है कि सुबह नहीं तो शाम पैदल घूमने निकल जाऊं। सुबह इसलिए नहीं जा पाता कि शुरू से जल्दी सोने और जल्दी जागने की आदत है, यानी रात दो बजे तक तो हर हाल में बिस्तर से लग ही जाता हूं और सुबह भी दस बजे के बाद बिस्तर पर नहीं रहता हूं।

वैसे सही बात तो यही है कि मुझे पैदल घूमने की कोई जरूरत कभी महसूस ही नहीं होती है, क्योंकि ऐसी कोई बीमारी नहीं है, जो सिर्फ पैदल चलने से ठीक हो। वजन भी इतना ही है कि आसानी से उठ जाता है ! मेरे आसपास इतने घूमने वाले हैं कि मुझे भी लगने लगता है कि पीछे नहीं रहना चाहिए। जैसे कुछ 'हिंदू गर्व से कह रहे हैं' तो मुझे भी कहने का मन होने लगता है !

दरअसल, मौसम मेरे पीछे नहा-धो कर पड़ा रहता है। अब गरमी है तो कौन पैदल निकलना चाहेगा, वह भी घूमने। घर में ही इतना पसीना बह जाता है कि बाहर जाने की जरूरत ही महसूस नहीं होती। हर रोज अपना टेम्प्रेचर देखता हूं, कभी तो कम होगा और उसी इंतजार में बैठा रहता हूं। गरमी में कहा जाता है कि ठंडा हो जाए, तब निकलना चाहिए। जब ठंडा हो जाता है तो बाहर निकल कर देखता हूं कि अंधेरा हो गया। इतना जोखिम तो घूमने के लिए नहीं लिया जा सकता ना। गरमी भी ना हो और अंधेरा भी नजर ना आए। मुझे ऐसे मौसम का इंतजार पूरी गरमी रहता है।

अब बारिश में तो निकलने का कोई मतलब नहीं। एकाध रोज चले जाओ तो कपड़े सुखाने की झंझट खड़ी हो जाती है। पत्नी भी उलाहने देने लगती है कि मुन्ना के पोतड़े सुखाऊं या तुम्हारे ! फिर छाता हाथ में ले कर घूमना, मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी आंदोलन में तख्ती उठाए चल रहा हूं या किसी मंत्री के पीछे चलता अफसर ! वैसे भी आजकल सरकार को आंदोलन-प्रदर्शन जैसी हरकत जमती नहीं है। पुलिस देख कर अकसर अपना छाता बंद कर लेता हूं कि गलतफहमी क्यों पैदा करना।

बारिश हो जाए तो फिर भी छाता सार्थक हो जाता है, लेकिन मौसम विभाग को शर्मिंदा करने के लिए बादल कहीं और बरस जाएं तो फिर बंद छाता हाथ में लिए घूमना ऐसा है, जैसे चौकीदार के हाथ में डंडा। घूमने की जगह बैठने का तो इंतजाम रहता है, लेकिन छाता रखने की कोई महफूज जगह नहीं। चूंकि जन्म से शक्की हूं तो मुझे भरोसा नहीं है कि लौटने पर छाता वहीं मिलेगा, जहां रख कर गया था।

और फिर सर्दी का तो आपको पता ही है कि नाम ही पूछती रहती है हर दिन। रजाई से बाहर नहीं निकलने के सौ बहाने तैयार करने पड़ते हैं तो घूमने जाने की तो सोच कर ही कंपकंपी आने लगती है। फिर तैयार भी तो ऐसे होना पड़ता है कि जैसे यूक्रेन के खिलाफ रूसी सिपाही तैयार नजर आते हैं। गरमी में तो कुरता-पायजामा पहना, चप्पल सटकाई और चल दिए। सर्दी के विधि-विधान ही भारी पड़ते हैं। जो भी पहने हो, उन्हें तो रहने दो, पहले गरम कमीज, फिर बिना बांह का स्वेटर, फिर कोट, फिर मफलर, फिर टोपा और नीचे भी इतनी ही एहतियात कि मोजे और जूते। इतना सब करते हुए लगता है जैसे घूमना तो यहीं हो गया, अब जाने की क्या जरूरत ! सर्दियों में कई बार इसी तैयारी के जरिए घर बैठे पसीना बहाया है।

अब मुद्दे की बात ! इस बार सोचा था कि नए साल में नियमित घूमने जाऊंगा, सारी तैयारी थी। वैसे मुझे नहीं मालूम कि मन कट्ठा करने के अलावा और क्या तैयारी की जाती है। तभी पढ़ने में आया कि 'लेक' का आविष्कार हो गया है। यह ऐसी टेबलेट है, जिसे खाते ही उतना ही पसीना शरीर से निकलने लगेगा, जितना कि दस किलोमीटर पैदल घूमने पर निकलता है।

डेनमार्क के प्रोफेसर थॉमस पॉलसे ने यह खोज की है और मेरे पैदल घूमने के प्लान को चौपट कर दिया है। बताइए, जब घर बैठे, टीवी या मोबाइल टापते हुए, चाय के साथ पकोड़े का स्वाद लेते यदि दस किलोमीटर घूमने जैसा पसीना शरीर छोड़ रहा है तो अपने को क्या अड़ी है कि बाकी लोगों की तरह बाहर निकलें। दावा तो यही किया जा रहा है कि जो शरीर से कमजोर हैं या बीमार हैं और जो बाहर निकल नहीं सकते, उनके लिए ये टेबलेट है, तो ये सारी शर्तें तो मुझ पर ही लागू होती हैं।

अब मैं घूमने जा कर ऐसा क्या हासिल कर लूंगा, जो इस टेबलेट के खाने से मुझे घर बैठे मिल रहा है। बस, उसी गोली का इंतजार कर रहा हूं, जानता हूं बाकी भी यही कर रहे होंगे, लेकिन कहेंगे थोड़े ही !

उस (डायन) 'मां' के लिये...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

चुड़ैल या डायन को कहते हैं, जिनका बर्ताव कुछ अलग हो जाता है और खास तौर से मां के लिए तो समाज ने ऐसे पायदान बनाये हैं, जो कई बार नई-नई मां बनी महिलाओं के लिए चढ़ना नामुमकिन हो जाता है। इस मुद्दे पर डायरेक्टर, राइटर और कलाकार एलिजाबेथ सैंकी की फिल्म है विचेस उर्फ चुड़ैल।

शुरुआत में ही एलिजाबेथ यह दिखा देती हैं कि यह है तो डॉक्यूमेंट्री लेकिन कहने का अंदाज अलग है। बैकग्राउंड में कहानी सुनाती एलिजाबेथ हैं और परदे पर अनगिनत फिल्मों के सीन बदलते रहते हैं जहां मुस्कुराती, प्यार जताती, नाराज होती, हैरान होती, हर मूड की महिलाएं है। इन फिल्मों को कई बार देखा है, इन किरदारों को जानते हैं लेकिन इन्हें इस तरह से देखना अलग ही है ! करीब एक डेढ़ घंटे की यह डॉक्यूमेंट्री उन महिलाओं की गवाही को नजदीक से दिखाती है, उस तकलीफ को महसूस तो नहीं किया जा सकता, लेकिन जानने का मौका मिलता है। बच्चे के जन्म के बाद महिलाओं में डिप्रेशन, बेचैनी हो सकती है लेकिन जो इससे गुजर चुके हैं जानती हैं कि यह कितना खतरनाक था।

आज भी बच्चे के जन्म के बाद मां की दिमागी हालत के बारे में बहुत काम होना बाकी है। आमतौर पर नई मां से यह उम्मीद लग ही जाती है कि उसे बच्चे से ज्यादा कोई और इंसान पर ध्यान नहीं देना है, लेकिन आखिर इस नई मां के बारे में कौन सोचेगा ! आम हालात में मां और बच्चा यूनिट बन कर साथ ही जिन्दगी आगे बढ़ाते हैं, लेकिन अगर मां ऐसा नहीं कर पा रही है, तो उसके लिए क्या मदद है? क्या परिवार उसे गैर जिम्मेदार मां करार नहीं दे देगा? कितने मौके हैं जब परिवार ने यह सोचा कि इसे भी मदद की जरूरत हो सकती है ! दौर रहा है जब महिलाएं कुनबे और समाज में इलाज किया करती थीं, और इस दौरान अगर कभी किसी पुरुष पर कोई सवाल उठा दिया गया तो उस महिला को चुड़ैल या डायन बता कर मार डाला जाता था।

फिल्म में एलिजाबेथ सैंकी इस बात को खास तौर से सामने लाती हैं कि जिन महिलाओं को चुड़ैल या डायन बताया गया, मुमकिन है कि डिप्रेशन या दिमागी मरीज रही हो ! अफसोस कि उन्हें समझा ही नहीं गया। उससे भी डराने वाली बात यह है कि जब सैंकी और उनके सपोर्ट ग्रुप की सदस्य यह कहती हैं कि

बीमारी के उस दौर में अगर उनसे यह सवाल किया जाता कि क्या उन्होंने चुड़ैल वाले काम किये हैं तो वो यह जानते हुए कि इसकी सजा मौत है, इस जुर्म को कबूल कर लेतीं। फिल्म कहानी के जरिये जागरूकता फैलाने की कोशिश करती है, नए तरीके से बात रखती है, कभी-कभी सैंकी और उसके दोस्तों की कहानी और इतिहास और मौजूदा हालात की संगत का सुर बिगड़ता है लेकिन फिर भी यह फिल्म और उसकी बात दोहराने लायक है। यह फिल्म लंदन के फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जा रही है और आने वाले समय में मूबी पर मौजूद होगी।

सामयिक

चेतनादित्य आलोक
वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

यह जागने का समय है

महिलाओं के विविध रूपों के मानवाधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता लाने तथा उनके प्रति लोगों को निजी एवं सामूहिक जिम्मेदारियों का स्मरण कराने के लिए ही विश्व इन तमाम दिवसों के आयोजन किए जाते हैं। हालांकि ऐसे आयोजनों का अब कोई मतलब नहीं रह गया है, क्योंकि ये सब महज रिवाज बन कर रह गए हैं। न तो हमारी बेटियों, बहुओं, माताओं और बहनों के विरूद्ध बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और बलात्कार के बाद दरिंदगी करने वाले अपराधियों पर इनका कोई असर होता है और न समाज पर ही इन आयोजनों का कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई देता है। यहां तक कि कानून, जिसे निर्दोष और मासूम बेटियों, बहुओं और माताओं के लिए रक्षा कवच माना जाता रहा है, की सख्ती और मजबूती भी अब उन्हें अपराधियों से बचाने में असमर्थ साबित होती जा रही है। यदि ऐसा नहीं होता तो क्या दिन-प्रतिदिन महिलाओं के विरूद्ध इस भांति अत्याचार, उपेक्षा, उत्पीड़न, शोषण और दमन की घटनाएं बढ़ती नहीं जातीं।

महिला के कई रूप होते हैं। वह बेटी, बहू, मां, बहन, पत्नी, दादी, नानी आदि रूपों में हमारे इर्द-गिर्द जन्म से मृत्यु तक साए की तरह मौजूद रहती हैं। देखा जाए तो जीवन और समाज के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका किसी-न-किसी रूप में अवश्य पाई जाती है। इसके बावजूद आधुनिक वैश्विक सामाजिक ढांचे और आर्थिक एवं सांस्कृतिक खांचे में महिलाएं लगातार उपेक्षा, उत्पीड़न, शोषण और दमन का शिकार होती आ रही हैं। घर से लेकर बाहर तक सर्वत्र दमन और शोषण की चक्की में पिसतीं महिलाओं का वास्तविक महत्व समाज को अभी समझना शेष है। यही कारण है कि वैश्विक समाज में महिलाओं के महत्व को प्रतिपादित करने और उन्हें उनका वास्तविक अधिकार दिलाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 08 मार्च को विश्व भर की महिलाओं के प्रति आभार जताने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 26 अगस्त महिला समानता दिवस, 22 सितंबर को बेटियों के समर्थन में अंतर्राष्ट्रीय बेटी दिवस एवं 11 अक्टूबर को विश्व भर की बालिकाओं को समर्पित 'विश्व बालिका दिवस' का दुनिया भर में प्रमुखता से आयोजन किया जाता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो महिलाओं के विविध रूपों के मानवाधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता लाने तथा उनके प्रति लोगों को निजी एवं सामूहिक जिम्मेदारियों का स्मरण कराने के लिए ही विश्व इन तमाम दिवसों के आयोजन किए जाते हैं। हालांकि ऐसे आयोजनों का अब कोई मतलब नहीं रह गया है, क्योंकि ये सब महज रिवाज बन कर रह गए हैं। न तो हमारी बेटियों, बहुओं, माताओं और बहनों के विरूद्ध बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और बलात्कार के बाद दरिंदगी करने वाले अपराधियों पर इनका कोई असर होता है और न समाज पर ही इन आयोजनों का कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई देता है। यहां तक कि कानून, जिसे निर्दोष और मासूम बेटियों, बहुओं और माताओं के लिए रक्षा कवच माना जाता रहा है, की सख्ती और मजबूती भी अब उन्हें अपराधियों से बचाने में असमर्थ साबित होती जा रही है। यदि ऐसा नहीं होता तो क्या दिन-प्रतिदिन महिलाओं के विरूद्ध इस भांति अत्याचार, उपेक्षा, उत्पीड़न, शोषण और दमन की घटनाएं बढ़ती नहीं जातीं। केवल बलात्कार की भी बात करें तो नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रतिदिन कम-से-कम 87 महिलाओं के विरूद्ध बलात्कार के मामले सामने आते हैं।

तात्पर्य यह कि प्रत्येक घंटे हमारा देश तीन से भी अधिक महिलाओं के साथ बलात्कार की निर्मम घटनाओं और दरिंदगी का साक्षी बनता है। दुर्भाग्य से यह आंकड़ा भी अंतिम और संपूर्ण नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह तो सिर्फ उन घटनाओं को ही रेखांकित करता है, जिनकी रिपोर्ट पुलिस थानों में दर्ज की जाती हैं। निश्चित रूप से इनके अलावा भी देश भर में बलात्कार और दरिंदगी के न जाने कितने ही मामले नित्य प्रति घटित होते रहते होंगे, जिनकी कहीं कोई खोज-खबर लेने वाला नहीं होता है। कई बार तो पीड़िताएं स्वयं ही समाज के भय अथवा लोक-लाज के कारण बलात्कार की घटनाओं को छिपा देती हैं। वहीं, कई बार ऐसा करने के लिए उनके ऊपर माता-पिता और परिवार वालों का भारी दबाव होता है। अनेक बार ऐसा भी होता है कि बलात्कारी ही इतने दबंग होते हैं कि अपने वर्चस्व के कारण बलात्कार करने के बाद पीड़िताओं को डरा-धमकाकर रिपोर्ट दर्ज नहीं कराने देते। वहीं, कई बार तो रिपोर्ट दर्ज करने के मामले में पुलिस की भी बेपरवाही और गैर-जिम्मेदारी सामने आती रहती है। इसलिए महिलाओं के विरूद्ध घटित होती रहने वाली बलात्कार की घटनाओं की सही संख्या बता पाना किसी के लिए भी मुश्किल है। संभव है कि यह संख्या सैकड़ों में हो।

देखा जाए तो बलात्कार की घटनाओं को छिपाने के लिए पीड़िताओं के ऊपर माता-पिता और परिवार वाले प्रायः इसलिए दबाव बनाते हैं, क्योंकि उनकी मान्यता यह होती है कि यदि बेटी के बलात्कार की घटना का प्रचार हो गया तो उसका ब्याह नहीं हो पाएगा। दरअसल, हमारे समाज में आज भी इतनी जागरूकता और संवेदनशीलता नहीं आ पाई है कि 'रील लाइफ' की तरह कोई आगे आकर घोषित तौर पर यह कहने का साहस जुटा सके कि वह किसी बलात्कार पीड़िता को पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार है। वैसे संवेदनशीलता की बात करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि अब हमारे समाज में इसका कहीं ठौर-ठिकाना बचा ही नहीं है, न तो सार्वजनिक जीवन में और न ही निजी जीवन में... और यही कारण है कि अब पग-पग पर संबंधों की मर्यादाएं टूटने लगी हैं, बल्कि सच कहा जाए तो अब मनुष्य मात्र की मर्यादाएं भी तार-तार हो चुकी हैं। पहले लोग राह चलते किसी अनजान के साथ भी कहीं कुछ गलत होने पर बीच-बचाव कर लेते थे, लेकिन अब तो लोग ऐसी परिस्थिति में मजे लेने और वीडियो बनाने लगते हैं। पिछले ही महीने की बात है। महाकाल की प्राचीन नगरी के एक व्यस्ततम सड़क के किनारे एक महिला के साथ बलात्कार हुआ और लोग तमाशबीन बने रहे... वीडियो बनाते रहे।

इसी वर्ष जून में वाइरल 27 सेकंड के एक वीडियो में मुंबई की सड़क पर एक युवती को एक युवक ने पीट-पीटकर मार डाला था और वहां मौजूद भीड़ उस घटना का वीडियो बनाती रही। विडंबना यह है कि गैर जिम्मेदारी और संवेदनहीनता का भयावह उदाहरण पेश करतीं ये घटनाएं न तो पहली बार घटित हुईं और न ही ये आखिरी थीं, लेकिन इनके बारे में देख-पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी ने मनुष्य मात्र के शील, संवेदना और मर्यादा का हरण कर लिया है... कि मानवता की तमाम पुरानी कसौटियों की चमक अब फीकी पड़ चुकी है। चिंता होती है यह सोचकर कि सोशल मीडिया पर पोस्ट कर लाइक्स और शेयर प्राप्त करना आज हमारे लोगों की इतनी बड़ी प्राथमिकता कैसे बन गई। वास्तव में ये घटनाएं 'आई-ओपेनिंग' हैं, जो हमारे समाज और देश के भविष्य को लेकर चिंतित और भयभीत करती हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि सारे फसाद की जड़ यह मोबाइल ही है, क्योंकि देखा जाए तो मोबाइल के आने से पहले कोई इस भांति तमाशबीन होकर वीडियो नहीं बनाता था। बहरहाल, चाहे हमारी जो भी कमजोरी या लाचारी हो, परंतु हमें इस बात पर अवश्य विचार करना चाहिए कि आज तो इस विपश्रि की घड़ी में हम तटस्थ होकर तमाशबीन बने हुए हैं... वीडियो बना रहे हैं, लेकिन तब क्या करेंगे, जब इसी प्रकार कोई दरिंदा हमारे आंगन अथवा ड्योढ़ि तक आ धमकेगा? जाहिर है कि तब हम भी अकेले होंगे। हमारा भी कोई साथ देने नहीं आएगा। इसलिए यह जागने का समय है। हमें बिना देर किए जागना होगा।

चाकूबाजी में शामिल नाबालिग सहित 3 आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। गंज पुलिस ने चाकूबाजी करने वाले नाबालिग सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 20 अक्टूबर को गोलू पिता साहब लाल विश्वकर्मा (27 वर्ष) निवासी इंदिरा कॉलोनी गंज बैतूल ने थाने में

रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि सलमान, बबलू, इम्मा और एक नाबालिग बालक ने उनके साथ चाकू से हमला कर मारपीट की। शिकायत पर पुलिस ने धारा 296, 118(1), 3(5) बीएनएस 2023, और 25 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान आरोपी इमरान उर्फ इम्मा (30 वर्ष) निवासी इंदिरा कॉलोनी, शेक सलमान (22 वर्ष), शाहरुख खान (27 वर्ष) और एक नाबालिग बालक को विधिवत गिरफ्तार कर आरोपियों को न्यायालय में पेश किया है। इस कार्रवाई में निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उपनिरीक्षक इनफान कुरैशी, सहायक उपनिरीक्षक किशोरी लाल, प्रधान आरक्षक संदीप, आरक्षक अनिरुद्ध, और आरक्षक मनोज की विशेष भूमिका रही।

सारणी क्षेत्र में तेंदुआ और उसके शावक की दस्तक, लोगों में दहशत

बैतूल। तेंदुआ और उसके शावक की चहलकदमी से लोगों में दहशत है। तेंदुआ और उसके शावक को कर्मचारी कॉलोनी से सटे इलाके में घूमते देखा गया। लोगों ने इसकी सूचना वन विभाग की टीम को दी। टीम ने मौके पर पहुंचकर तेंदुए का मूवमेंट ट्रैक कर रही है। रेंजर शरदेंदु नायक ने बताया कि सोमवार शाम को कालोनी से सटे जंगल में तेंदुआ और उसके शावक का मूवमेंट देखा गया। जिसके बाद उसका मूवमेंट ट्रैक करने के लिए वन विभाग की एक टीम लगाई गई है। जानकारी के मुताबिक तेंदुए ने पास में ही एक बंदर का भी शिकार किया है। रेंजर शरदेंदु नायक ने आगे बताया कि फिलहाल तेंदुए के मूवमेंट पर नजर रखी जा रही है अगर वह रिहायशी इलाके की तरफ आता है तो आगे सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की टीम को सूचना देकर आगे प्लान किया जाएगा। वन विभाग ने लोगों से सतर्क रहने का आग्रह किया है। वन विभाग ने मॉर्निंग वॉक पर जाने वाले लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। कहा कि वे जंगल की तरफ न जाएं। खासतौर पर सुबह चार बजे से 7 बजे तक मॉर्निंग वॉक पर जाने वाले अकेले न निकले, जाए तो वे समूह में जाए।

न्यू बैतूल स्कूल ग्राउंड में लगेगी पटाखा दुकान, नपा ने डाला ले आउट

बैतूल। पटाखा दुकानें लगाने के लिए आखिरकार प्रशासन ने स्थान का चयन कर लिया है। अब कोठीबाजार स्थित न्यू बैतूल स्कूल ग्राउंड में पटाखा दुकानें लगाई जाएगी। दुकानें लगाने को लेकर नगरपालिका ने ले आउट डाल दिया है। नगरपालिका ने यहां दुकानों के लिए व्यवस्था बनाई है। अभी लाइसेंस की प्रक्रिया भी पूरी नहीं हो पाई है। अधिकारियों का कहना है कि दो-तीन दिन के भीतर लाइसेंस की प्रक्रिया को पूरा कर लिया जाएगा। इसके बाद स्थिति स्पष्ट हो जाएगी कि कितनी दुकानों को लाइसेंस प्राप्त हुआ है। गौरतलब रहे कि पटाखा दुकानों को लगाने के लिए स्थान के चयन को लेकर पिछले कई दिनों से गहमा-गहमी चल रही थी। कुछ व्यापारी लाल बहादूर शास्त्री स्टेडियम में पटाखा दुकान लगाने के पक्ष में थे। इसे लेकर व्यापारियों ने मांग भी की थी, जबकि खिलाड़ी और अन्य लोग स्टेडियम में पटाखा दुकान लगाने का विरोध कर रहे थे। आखिरकार प्रशासन ने स्थान का चयन कर चूने से लाइन डाल दी है। यहां कितनी दुकाने लगेगी, फिलहाल का निर्धारण नहीं हुआ है। इस संबंध में बैतूल नगरपालिका के वरिष्ठ राजस्व अधिकारी -ब्रजगोपाल परते ने बताया कि पटाखा दुकान लगाने के लिए न्यू बैतूल स्कूल ग्राउंड को चिन्हित किया है। नगरपालिका की तरफ से ले आउट डाला है।

कलेक्टर ने ली समय सीमा प्रकरणों की समीक्षा बैठक

बैतूल। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने मंगलवार को समय सीमा प्रकरणों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में विभिन्न विभागों से जुड़े लंबित प्रकरणों की गहन समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों व समस्याओं का त्वरित निराकरण किया जाए। उन्होंने विभागवार विस्तृत चर्चा करते हुए समय सीमा में लंबित मामलों पर तुरंत कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती तृप्ती पटेरिया सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज लंबित शिकायतों का निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने अधिकारियों से कहा कि सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों में गंभीरता एवं अति संवेदनशीलता के साथ काम करें और शिकायतों के निराकरण में तेजी लाए। इसके अलावा आयुष्मान कार्ड, संबल कार्ड, ई-केवाईसी के लंबित प्रकरणों को आगामी एक सप्ताह में निराकरण करने के निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग, शिक्षा विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, श्रम विभाग, स्वास्थ्य विभाग, राजस्व, खनिज विभाग सहित अन्य विभागों के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सभी विभागीय अधिकारी अपने कार्यालय को स्वच्छ रखें तथा समय-समय पर अपने-अपने अधीनस्थ कार्यालय का निरीक्षण करें।

खुली नालियों पर फर्शी डालकर आना-जाना करते हैं लोग, बना रहता है हादसे का खतरा

नालियां खुली होने से लोगों ने बना दिया डस्टबिन, झाड़ू लगाकर डाल रहे कचरा, थम रहा पानी

संजय द्विवेदी, बैतूल। मासूम की मौत के बाद भी नगरपालिका अंडरग्राउंड सीवरेज लाइन प्रोजेक्ट को लेकर गंभीर नहीं है। अभी भी कई जगहों पर नालियां खुली पड़ी है। नालियों में पानी थमा है। लोग दुर्गंध और गंदगी से परेशान है। कोठीबाजार जैसे भीड़ वाले क्षेत्र में भी दुकानों के सामने नालियां खुली पड़ी है। दुकानदार नालियों पर फर्शी डालकर आना-जाना करते है। कई बार रात्रि में लोग इन नालियों में गिरने से भी बचे है। नालियां खुली होने से गंदगी ज्यादा फैल रही है। नालियां कचरे से लबालब भरी रहती है। जिससे निस्तार के पानी की निकासी उचित ढंग से नहीं हो पाती और गंदगी की वजह से मच्छरों का लार्वा तेजी से पल-बढ़ रहा है। खुली नालियों के कारण हमेशा दुर्गंध फैलती है। लोगों ने नालियों को अंडरग्राउंड करने आवेदन भी दिया। खासबात यह है कि शहर में अंडरग्राउंड सीवरेज लाइन की प्रोजेक्ट रिपोर्ट 2 माह से बनकर तैयार है, लेकिन इस प्रोजेक्ट को आगे नहीं बढ़ाया। परिणाम हालात पहले जैसे ही है यानि आज भी नालियां खुली पड़ी है।

अब भी फाइलों में 10 साल पहले बना प्लान- नगरपालिका ने 10 साल पहले भी अंडरग्राउंड सीवरेज का प्लान तैयार किया था। 2014 में अंडरग्राउंड पाइप लाइन बिछाने 10 करोड़ का प्लान बनाया था। उस वक्त 52 किमी अंडरग्राउंड पाइप लाइन बिछाई जानी थी, लेकिन पेयजल को प्राथमिकता देते हुए इस प्रोजेक्ट को डीले कर दिया। अब फिर नगरपालिका ने ड्रेनेज सिस्टम के सर्वे और डीपीआर बनाने का ठेका एमएसवी कंसल्टेंसी गुड़गांव को जनवरी 2024 में दिया, जिसके अनुसार 175 किमी अंडरग्राउंड ड्रेनेज सिस्टम बनना है। कंसलटेंसी ने सर्वे पूरा करके डीपीआर बनाकर भी दे दी है। दो माह से नालियों के अंडरग्राउंड करने डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट रखी है, लेकिन बैठक का आयोजन कर इस डीपीआर को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया नपा ने नहीं की। जिससे नालियों को अंडरग्राउंड करने का यह प्रोजेक्ट फाइलों तक ही सीमित है।

नालियां खुली होने से समा रहा कचरा- नालियां खुली होने से लोगों ने इसे डस्टबिन बना दिया है। झाड़ू लगाने के बाद कचरा नालियों में ही फेंक देते है। यहीं वजह है कि नालियों के अंदर जलजमाव एक बड़ी समस्या है। रोजाना नालियों की सफाई और इससे निकलने वाले कचरे का उठाव नहीं होने से कचरे से सड़ांध पैदा होने लगता है। जिससे स्थिति बदतर हो जाती है। लोगों ने बताया कि वार्ड में विकास तो हो रहा, मगर छोटी-छोटी अनदेखी के कारण लोग परेशान है। खुली नालियों को ढकने की आवश्यकता है। नालियां खुली होने से और नियमित सफाई नहीं होने की वजह से नाली जाम होती है। नतीजा पानी सड़क पर बहता है।

रात्रि में गिरकर चोटग्रस्त हो रहे लोग

खुली पड़ी नालियों की वजह से रोजाना कोई न कोई हादसे का शिकार होते है। कोठीबाजार क्षेत्र के दुकानदारों ने बताया कि कई स्थानों पर नालियां ऐसी है, जहां नालियां तो है, लेकिन स्ट्रीट लाइट नहीं। जिससे रात्रि के समय लोगों को समझ नहीं आता और वे नालियों में गिर जाते है। कुछ नालियों का निर्माण वर्षो वर्ष पहले हुआ था। अब यह नालियां काफी क्षतिग्रस्त अवस्था में पहुंच गई है। नालियों का पुनः निर्माण तक नहीं कराया गया है। नालियां गहरी होने से लोगों में अब हादसों को लेकर भी डर बना हुआ है, क्योंकि कुछ ही दिनों पहले एक मासूम की नाली के तेज बहाव में बहने से मौत हो गई थी। नागरिकों ने नगरपालिका से खुली नालियों को अंडरग्राउंड करने की मांग की है।

इनका कहना है

अंडरग्राउंड ड्रेनेज सिस्टम के तहत अंडरग्राउंड पाइप लाईन बिछाने के प्रोजेक्ट का हमने सर्वे करवाकर डीपीआर तैयार करवाया है। अब केवल समिति से अनुमोदन लिया जाना बाकी है। जिलास्तरीय समिति की बैठक के बाद ही आगे की प्रक्रिया होगी। वर्तमान में कोठीबाज़ार पेट्रोल पंप से थाना कोतवाली तक बन रही सड़क के साथ नालियों का पुनर्निर्माण कर उनकी सफाई और पानी निकासी की उचित व्यवस्था कर कवर्ड (ढंकने) का काम किया जा रहा है।

-श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर,
अध्यक्ष, नपा बैतूल

पीढ़ियों का इतिहास समेटे हुए है नगर की ऐतिहासिक रामलीला, अनेकों पीढ़ियों से जुड़े हैं परिवार

बैतूल / मुलताई। पवित्र नगरी में 120 वर्षों से निरंतर गांधी चौक में दशहरे से प्रारंभ होने वाली ऐतिहासिक रामलीला का अपना धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रहा है। महामारी की मनौती के रूप में 1904 से प्रारंभ हुई ऐतिहासिक रामलीला अपने साथ पीढ़ियों का इतिहास समेटे हुए हैं, इस लीला में परंपरागत रूप से स्थानीय लोग ही रामायण के पात्र की भूमिका निभाते हैं, और यह भूमिका अपनी आने वाली पीढ़ियों को विरासत मे मिलती है। रामलीला में राम,लक्ष्मण, विभीषण, दशरथ,कैकई हनुमान, मेघनाथ , नारायणतक, अंगद जैसे अनेकों भूमिकाएं हैं । जो पीढ़ियों से हस्तांतरित होती रही है। रामलीला मंच पर अभिनय करने वाले ऐसे पात्र भी है जिनकी 5 पीढ़ियां निरंतर रामलीला मंच से जुड़ी रही है, जिनके दादा पीता और वह स्वयं और अब उनकी औलाद एवं पौत्र भी इस लीला में काम कर रहे हैं। रामलीला के आरंभ के संबंध रामलीला से जुड़े संजय अग्रवाल बताते हैं कि, रामलीला का आरंभ 1904 मे उस वक्त हुआ था, जब नगर में महामारी फैली हुई थी, और लक्ष्मी नारायण मंदिर के बापुदास महंत ने यह मनौती मानी थी कि, अगर महामारी समाप्त हो जाएगी तो वह, प्रतिवर्ष रामलीला का मंचन कराएंगे, महामारी समाप्त हुई और तब से अब तक लगभग 118 वर्षों तक नगर में निरंतर रामलीला का मंचन किया जा रहा है जो आज नगर की सांस्कृतिक धरोहर है।

बाल किशन चंदेल 5 पीढ़ियों से रामलीला में निभा रहे हैं सहभागिता- राम लीला में बाल किशन चंदेल लखेरा महत्वपूर्ण कलाकारों में से एक है जो रामलीला में विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाते हैं। हास्य कलाकार से लेकर उनका अभिनय और व्यक्तित्व रामलीला मंचन में जहां दर्शकों को जोड़ता है वही पात्रों को स्मरणीय बनाता है। वह 5 पीढ़ियों से इस लीला में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाते आ रहे हैं, बाल किशन चंदेल जिनकी उम्र लगभग 73 वर्ष है वह बताते हैं कि मैं लगभग 53 वर्षों से रामलीला में विभिन्न पात्रो की भूमिका निभाते रहा हूं, मुझसे पहले मेरे पिताजी स्वर्गीय खेमलाल लखेरा, उनके दादाजी स्वर्गीय नंदलाल लखेरा रामलीला में सूर्पनखा, कुंभकरण, केवट मंथंरा, सबरी ,विभीषण की भूमिका निभाते रहे हैं, अब यही सब भूमिका वह निभाते हैं, उनका पुत्र मनीष चंद्र चंदेल और पौत्र शशि चंदेल भी रामलीला में अनेक पात्र की भूमिका निभा रहे हैं । इस प्रकार हम 5 पीढ़ियों से इस रामलीला से जुड़े है। बालकिशन जी बताते हैं कि देश की अन्य रामलीला की तुलना में मुलताई नगर में आयोजित होने वाली रामलीला अलग इसलिए है क्योंकि यहां सभी पात्र स्थानीय, होते हैं और यह सिद्ध रामलीला है जहां लोग पूरे धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन के साथ इस लीला का मंचन करते हैं।

विधायक ने किया भौंरा क्षेत्र का दौरा, सुनी लोगों की समस्याएं

भाजपा सरकार की जनहितैषी योजनाओं की दी जानकारी

बैतूल/भौंरा। भाजपा का सदस्यता अभियान चल रहा है। इस अभियान में लोगों को जोड़ने और सदस्य बनाने क्षेत्रीय विधायक अपने विधानसभा क्षेत्र का भ्रमण कर रही है। मंगलवार को घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा बाई उइके भौरा पहुंची, जहां विधायक गंगा बाई उइके ने लोगों को भाजपा की जनहितैषी योजनाओं को लेकर जानकारी दी। विधायक

श्रीमती गंगा बाई उइके ने बताया कि भाजपा एक ऐसी पार्टी है, जो अंतिम छोर के व्यक्ति को भी ध्यान में रखकर योजनाएं बनती है। लोगों तक भाजपा की योजनाओं का लाभ पहुंचे और अधिक से अधिक लोग भाजपा से जुड़े, इस अभियान को लेकर भौंरा क्षेत्र का दौरा किया है। इस दौरान लोगों ने अपनी समस्याओं से भी भाजपा विधायक गंगाबाई उइके को अवगत कराया। विधायक ने बताया कि किसानों ने विगत दिनों हुई तेज बारिश से फसलों को नुकसान होने की जानकारी दी है। कई लोग पीएम आवास का लाभ नहीं मिलने की शिकायत की रहे थे। ऐसी शिकायतों को संज्ञान में लेकर लोगों की समस्याओं को दूर किया जायेगा। विधायक के साथ सरपंच श्रीमती मीरा धुर्वे, जय किशोर मिश्रा, राजेंद्र साहू, असीम सिकदार, श्री पवार, पूनम पांसे, श्री रंजने सहित अन्य उपस्थित थे।

बाल भिक्षावृत्ति रोकने चलाया जन जागरूकता अभियान

बैतूल। जिले में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम एवं जागरूकता के लिये कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग गौतम अधिकारी ने बताया कि भिक्षावृत्ति की रोकथाम एवं जागरूकता के लिये मंगलवार को आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने रेलवे स्टेशन के आस पास सर्वे कर उपस्थित नागरिकों को समझाइश दी तथा उन्हें बताया कि किशोर न्याय बालकों की देखरेख एवं संरक्षण अधिनियम 2015 की धारा 76 के तहत बालक का भिक्षा के लिये प्रयोग करने पर या बच्चे से भिक्षावृत्ति कराने पर 5 वर्ष का कारावास व 1 लाख रुपए के दंड का प्रावधान है।

वन विद्यालय में जैव विविधता विषय पर क्विज प्रतियोगिता संपन्न

बैतूल। मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड भोपाल, वन विभाग एवं लोक शिक्षण मध्यप्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में जैव विविधता को लेकर विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता क्विज कार्यक्रम 2024 का आयोजन वन विद्यालय कालापाठा बैतूल में किया गया। जिसमें बैतूल जिले के हाईस्कूल/हायर सेकेण्डरी के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की कुल 88 टीमों के 264 विद्यार्थियों द्वारा उत्साह पूर्वक भाग लिया गया। प्रतियोगिता में जैव विविधता विषय पर क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य जैव विविधता धरोहर एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति युवा व शिक्षण समुदाय को जागरूक करना तथा प्रतिभागियों को जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरण आदि विषय के संबंध में ज्ञानवर्धन करना है। कार्यक्रम में विजेता टीमों को पुरस्कार स्वरूप मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदाय किए गए तथा अन्य प्रतिभागी टीमों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र प्रदाय किये गये। नवीन गर्ग भा.व.से.,वनमंडलाधिकारी उत्तर बैतूल (सा.) वन मंडल द्वारा जैव विविधता के महत्व को विद्यार्थियों से साझा किया एवं संबंधित जानकारी दी गई। साथ ही विद्यार्थियों को वन सम्पदा के संरक्षण के अलावा मानव जीवन में जैव विविधता से होने वाले लाभों की भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में नवीन गर्ग, भा.व.से., वनमंडलाधिकारी, उत्तर बैतूल (सा.) वनमंडल, अजय वाहने, उपवन मंडलाधिकारी सारनी (सा.) उपवन मंडल, भूपेन्द्र कुमार वरकडे, सहायक संचालक जिला शिक्षा बैतूल, संजय गुहे, प्राचार्य शासकीय हाईस्कुल मलकापुर, श्रीमती तबस्सुम कुरैशी, प्राचार्य शासकीय हाईस्कुल गौंडीगौला तथा वन विभाग एवं शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रतियोगिता में यह छात्राएं रहीं विजेता

जिला स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में गुरुकुल विद्या मंदिर मुलताई की छात्रा तुलसी बोबड़े, धानि बारंगे एवं काव्या पंवार द्वारा प्रथम स्थान, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल की नुपुर कवडकर, भूमिका देशमुख एवं अनुष्का ठाकरे द्वारा द्वितीय स्थान तथा सीएम राइज शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल की चित्रा राठौर, शिवम मिश्रा एवं रूद्र पंड्या द्वारा तृतीय स्थान प्राप्त किया गया। प्रतियोगिता में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त टीम द्वारा 12 नवम्बर 2024 को राज्य स्तरीय क्विज कार्यक्रम में भाग लिया जायेगा।

आरएसएस के मुख्य लक्ष्य-नागरिक कर्तव्य, स्वदेशी जीवनशैली, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण: ओम सिसोदिया

बैतूल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बैतूल द्वारा विजयादशमी संवाद कार्यक्रम कालापाठा में संपन्न हुआ। जिसमें सरसंघचालक डॉ मोहन राव भागवत द्वारा विजयादशमी के उपलक्ष्य में अपने उद्बोधन में रखे। विचारों को सामाजिक बंधु तक पहुंच सके इस विचार को लेकर मंचासिन आरएसएस के जिला सह संघचालक खेमराज डढोरे एवं ओम सिसोदिया मध्य क्षेत्र सेवा प्रमुख उपस्थित रहे। कार्यक्रम में संघ के संपर्क विभाग की सभी श्रेणी के सम्मानित बंधु व जिले की

मातृशक्ति,समाज के प्रमुख व विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी कार्यक्रम मे उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता ओम सिसोदिया ने आरएसएस के 100 वर्ष की विस्तृत चर्चा करते हुए पांच परिवर्तन जो की आरएसएस का मुख्य लक्ष्य है जिसमें नागरिक कर्तव्य, स्वदेशी जीवन शैली, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण इन पांच परिवर्तन पर बड़े विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुये अपनी बात रखी व इसी के साथ सामाजिक बंधुओं से भी उनके विचार को जाना व संवाद किया।

भोपाल कलेक्टर ने आधी रात लगाई अफसरों की क्लास

सीएम हेल्पलाइन पर पेंडिंग शिकायतों को लेकर की वन-टू-वन बात; एक दिन में निपटी 600 शिकायतें

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 28 अक्टूबर को सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों की समीक्षा करेंगे। भोपाल में भी हजारों शिकायतें पेंडिंग है। ऐसे में अफसरों की नींद उड़ी हुई है। इसके चलते कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने आधी रात अधिकारियों की क्लास लगाई और उनसे वन-टू-वन चर्चा की। मंगलवार को भी मीटिंग होगी।

संभवतः यह पहला मौका है, जब भोपाल कलेक्टर सिंह ने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के निराकरण में सबसे ज्यादा खराब परफॉर्मेंस देने वाले डेढ़ दर्जन से ज्यादा विभागों के अधिकारियों की देर रात मीटिंग की। सोमवार-मंगलवार की रात 12.30 से रात 12.45 तक ऑनलाइन बैठक में जिला पंचायत सीईओ ऋतुराज सिंह भी शामिल हुए।

हर रोज हो रही बैठक

इससे पहले सोमवार शाम को टीएल बैठक में कलेक्टर ने इन अधिकारियों को फटकार लगाकर देर रात तक दफ्तर में बैठकर काम करने के लिए कहा था। यह भी कहा था कि वे आधी रात को ऑनलाइन जुड़ कर शिकायतों के निराकरण का रिजल्ट पूछेंगे। इसके बाद ये अधिकारी देर रात तक अपने दफ्तरों में बैठकर शिकायतों को बंद कराने में जुटे रहे। बैठक में यह बात सामने आई कि सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण में भोपाल 26वीं रैंकिंग पर है। राजस्व, मत्स्य, पशुपालन, सहकारिता, सामाजिक न्याय सहित अन्य डेढ़ दर्जन विभाग डी रैंकिंग में शामिल हैं। कलेक्टर की फटकार और नाराजगी के बाद करीब 600 शिकायतें एक ही दिन में निपटा दी गई।

100 दिन पुरानी शिकायतों पर ज्यादा जोर

भोपाल में 100 दिन पुरानी शिकायतों को निपटाने पर ज्यादा जोर है। कलेक्टर सिंह ने भी स्पष्ट कहा है कि ऐसी शिकायतों को अनावश्यक रूप से पेंडिंग न रखें। 50 दिन पुरानी शिकायतें भी निपटाई जा रही हैं।

कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह और जिपं सीईओ ऋतुराज सिंह ने सोमवार को भी सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों की समीक्षा की थी।

3 दिन में आधी शिकायतों के निराकरण का टारगेट

अगले 3 दिन में आधी शिकायतों के निराकरण का टारगेट रखा गया है। ताकि, सीएम के सामने पेंडिंग शिकायतों के प्रेजेंटेशन में भोपाल की स्थिति बेहतर रहे।

ये शिकायतें सबसे ज्यादा: नगर निगम की ज्यादातर शिकायतें स्ट्रीट डॉग, अतिक्रमण, सीवेज, आवारा पशु, स्ट्रीट लाइट, बिल्डिंग परमिशन, सफाई से जुड़ी है। हर सप्ताह महापौर मालती राय समीक्षा जरूर करती हैं, लेकिन नई शिकायतों से आंकड़ा बढ़ा हुआ रहता है। राजस्व विभाग की नामांकन, सीमांकन, बंटाकन समेत जमीन से जुड़े मसलों को लेकर शिकायतें हैं।

इसलिए भी आंकड़ा बढ़ा: भोपाल में हर मंगलवार को जनसुनवाई होती है। जिसमें औसत 100 आवेदन आते हैं। इन शिकायतों को भी सीएम हेल्पलाइन में दर्ज किया जाता है। इसलिए आंकड़ा बढ़ा हुआ है।

'पुलिस को इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस के आधार पर ट्रेनिंग की जरूरत'

भोपाल में पूर्व जस्टिस बोले- तकनीक से अपराध का ट्रेंड बदला है

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के डायरेक्टर और सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश अनिरुद्ध बोस ने कहा है कि, पुलिस को इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस गैदरिंग के आधार पर ट्रेनिंग दिए जाने की जरूरत है। पुलिस की विवेचना तभी सफल है। जब अपराधी को सजा मिले। ये बातें पुलिस की वर्किंग, ट्रेनिंग में सुधार और पुलिस की नैतिकता और कौशल विकास को लेकर केंद्रीय पुलिस प्रशिक्षण अकादमी भोपाल में हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में कही। 'सैनिटाइज द माइंड ऑफ पुलिस फोर्स एट द पुलिस स्टेशन' लेवल का जिक्र करते हुए जस्टिस बोस ने कहा कि, थाने के पुलिसकर्मी के इन्वेस्टिगेशन में भी बहुत ध्यान दिए जाने की जरूरत है। जब थानों में मौखिक या इलेक्ट्रॉनिकली एफआईआर दर्ज की जाए तो इसकी वीडियोग्राफी भी आज की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि न्याय संहिता हमें क्राइम से लड़ने की ताकत देती है। इसके लिए पुलिस में ह्यूज स्किल डेवलप करना जरूरी है। उन्होंने अपराध के स्वरूप के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने का जिक्र कर कहा कि मनी लांड्रिंग, आर्म्स ट्रेड, नारकोटिक्स, क्रिप्टो करेंसी, डार्कनेट अब लोकल लेवल के नहीं, इंटरनेशनल लेवल के क्राइम हो गए हैं और इसकी विवेचना में सूक्ष्मता जरूरी है।दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का एजेंडा पुलिस की वर्किंग-ट्रेनिंग में सुधार और पुलिस की नैतिकता-कौशल विकास है।

अपराधियों ने अपराध की नई तकनीक अपनाई

जस्टिस बोस ने कहा कि, बदलते दौर में अपराधियों ने अपराध की नई तकनीक इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। इससे पुलिस के काम में कॉम्प्लेक्स की स्थिति बनने लगी है। पुलिस का ह्यूज रिस्पांस देश और दुनिया में है और इसे बनाए रखने के लिए ट्रेनिंग की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि पुलिस फोर्स को यह ध्यान रखना होगा कि वे शाम 5 बजे के बाद स्टेट का फेस होते हैं। थाने में आने वाला हर व्यक्ति अपने लिए पॉजिटिव थिंकिंग लेकर आता है, उसे भी ध्यान रखना चाहिए।

जस्टिस बोस बोले- देश में 8 लाख केस पेंडिंग हैं

एनसीआरबी 2022 के आंकड़ों का जिक्र करते हुए जस्टिस बोस ने कहा कि, देश के 18 हजार से अधिक थानों में एक लाख से अधिक सब इंस्पेक्टर हैं। इसके बाद भी 8 लाख से अधिक केस विवेचना के लिए पेंडिंग हैं।

पटवारी बोले- म.प्र.में शिवराज की 33 योजनाएं बंद

सीएम मोहन यादव से पूछे सवाल, कहा- योजनाओं का फंड आवंटन क्यों रोका गया

भोपाल (नप्र)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मोहन यादव सरकार के 10 महीने पूरे होने पर मंगलवार को 10 सवाल पूछे। कहा- मुख्यमंत्री जी, जनता का वोट शिवराज जी के नाम पर मिला था। आपको मोदी जी ने मुख्यमंत्री बना दिया। आपको जनता ने मुख्यमंत्री नहीं बनाया। आप केवल बीजेपी के मुख्यमंत्री नहीं हैं।

शिवराज जी ने जब वोट लिया तब उन्होंने जनता के सामने एक वचन पत्र दिया था। कहा था कि मैं बहनों को हर महीने 3000 दूंगा। हर हालत में दूंगा। आप (सीएम) ने बीच में कहा कि हम 5000 तक देंगे। 10 महीने की सरकार में 3000 क्यों नहीं दिया? 450 में गैस सिलेंडर का क्या हुआ? आपकी सरकार को सांप सूंघ गया।

पटवारी ने कहा कि शिवराज ने जो 33 योजनाएं चालू की थीं। मोहन सरकार ने उन योजनाओं को बंद कर दिया। सरकार को जवाब देना चाहिए कि उन योजनाओं को फंड आवंटन क्यों रोका गया है? पीसीसी चीफ जीतू पटवारी के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक भी मौजूद थे।

5 मंगलवार से शिवराज समय नहीं दे रहे-पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने अपने आवास पर मीडिया से चर्चा में कहा- आज मंगलवार है। मैं पिछले पांच मंगलवार से शिवराज जी से समय मांग रहा हूं, क्योंकि वे देश के कृषि मंत्री हैं। चाहे झारखंड, महाराष्ट्र, हरियाणा हो जहां चुनाव होते हैं वे मध्य प्रदेश की दुहाई देते हैं। किसानों के हित और अधिकारों की बातें करते हैं। वे कहते हैं कि वे किसान के बेटे हैं। पटवारी ने कहा कि मुझे नहीं पता वे किसान के बेटे हैं, इसमें कितना सच है या कितना झूठ? लेकिन, मैं किसान का बेटा हूं मैं किसान की उस वेदना, पीड़ा और सत्य को शिवराज जी से मिलकर उनसे सकारात्मक बातें करना चाहता हूं। एक किसान के सीने बेटे में जो दर्द होना चाहिए उसको दूसरे किसान के बेटे से संवाद करना चाहिए। लेकिन, शिवराज जी यह नहीं करना चाहते।

कृषि उपज मंडी में लगेगा फटाखा बाजार

सुबह सवेरे सोहागपुर । प्रदेश शासन के निर्देशानुसार सुरक्षित स्थानों पर फटाखा बाजार निर्धारित करने के उद्देश्य से कृषि उपज

मंडी प्रांगण में फटाका बाजार लगाया जाएगा। इसी संदर्भ में मुख्य नगर पालिका अधिकारी राकेश मिश्रा,राजस्व शाखा प्रभारी संजय परसाई, मनोज गोलानी, हरगोविंद व्यास, सूर्यनारायण, लक्ष्मी नारायण मालवीय, प्रहलाद किरार, नरेंद्र धुर्वे ,प्रबुद्ध दुबे , प्रवीण, सचिन, रणधीर रघुवंशी, राजेश रघुवंशी ,अनिल रघुवंशी, राधेश्याम रघुवंशी, प्रकाश मेहरा नगर परिषद कर्मचारी एवं फटाका व्यापारी की उपस्थिति में में 61 फटाका दुकानों का ले आउट डाला गया।

सुबह 9 से शाम 5 बजे तक 20 प्रतिशत सस्ती बिजली

म.प्र.में स्मार्ट मीटर लगाकर काउंट करेंगे यूनिट; रात के टैरिफ में बदलाव नहीं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अप्रैल 2025 से सभी घरेलू उपभोक्ताओं को सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे के बीच 20 प्रतिशत कम दाम पर बिजली मिलेगी। रात में इस्तेमाल बिजली की दरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इसके लिए ऊर्जा विभाग नवंबर में विद्युत नियामक आयोग में टैरिफ पिटिशन दायर कर रहा है। सुनवाई के बाद नए रेट का आदेश जारी किया जाएगा।

ऐसा इसलिए मुमकिन हो रहा है, क्योंकि मध्यप्रदेश में रोजाना 2,380 मेगावाट सोलर इलेक्ट्रिसिटी बन रही है। अप्रैल 2024 से ही 10 किलोवाट या इससे ज्यादा की बिजली खपत करने वाले उपभोक्ताओं को दिन में 20 फीसदी कम दर पर बिजली मिल रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हाल ही में हुई एक बैठक के दौरान बिजली विभाग के अफसरों को टैरिफ कम करने की योजना बनाने को कहा था। इसके बाद ऊर्जा विभाग ने उत्तर प्रदेश सरकार के साथ मिलकर मध्यप्रदेश में 8 हजार मेगावाट का सोलर प्लांट लगाने का करार किया है। इस प्लांट का काम 2026 तक पूरा करने की योजना है।

स्मार्ट मीटर करेंगे अलग-अलग गणना

योजना के तहत बिजली कंपनियां स्मार्ट मीटर लगाने का काम कर रही हैं। इनसे दिन और रात में इस्तेमाल की जा रही बिजली यूनिट की अलग-अलग गणना की जा सकती है।

एक मेगावाट से रोज 4000 यूनिट बिजली

बिजली कंपनी से जुड़े एक्सपर्ट के मुताबिक, एक मेगावाट में करीब 4000 यूनिट बिजली प्रतिदिन बनती है। मध्यप्रदेश में मौजूदा सभी सोलर परियोजनाओं की क्षमता करीब 2380 मेगावाट रोजाना है। ऐसे में करीब 95.20 लाख यूनिट बिजली रोज केवल सोलर परियोजनाओं से मध्यप्रदेश को मिल रही है।

रीवा सौर परियोजना से देश में पहली बार राज्य के बाहर दिल्ली मेट्रो जैसे कमर्शियल प्रोजेक्ट में बिजली सप्लाई की गई थी। इसके अलावा आगर-शाजापुर-नीमच सौर परियोजना से मध्यप्रदेश के साथ-साथ भारतीय रेलवे को अलग-अलग 7 राज्यों में बिजली सप्लाई की जा रही है।

इस हफ्ते एमपी के पूर्वी हिस्से में बारिश के आसार

सर्दी की दस्तक, पचमढ़ी सबसे ठंडा; भोपाल, इंदौर में 20 डिग्री पहुंचा रात का तापमान

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में सर्दी ने दस्तक दे दी है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन में रात का टेम्प्रेचर 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच गया है जबकि ग्वालियर समेत दूसरे शहरों में 18-19 डिग्री के बीच है। पचमढ़ी में दिन-रात दोनों ही समय सबसे ठंडा हैं। मौसम विभाग की मानें तो अब ठंड का असर धीरे-धीरे बढ़ेगा। पिछले 10 साल का ट्रेंड भी यही है। अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में रात का टेम्प्रेचर तेजी से लुढ़कने लगता है। लो प्रेशर एरिया और साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की वजह से पिछले एक सप्ताह से प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में बारिश का दौर जारी रहा। सोमवार को बारिश थम गई। नए सिस्टम की एक्टिविटी से तीन दिन बाद प्रदेश के पूर्वी हिस्से में फिर बारिश हो सकती है।

रात में इन शहरों में पारा सबसे कम-प्रदेश के कई शहरों में रात का टेम्प्रेचर 2 से 5 डिग्री सेल्सियस तक लुढ़क गया है। पचमढ़ी में रविवार-सोमवार की रात में पारा 14.8 डिग्री सेल्सियस रहा। यहां की रात प्रदेशभर में सबसे ठंडी रही। छतरपुर जिले के नौगांव, रायसेन, छिंदवाड़ा, खजुराहो, मंडला, नरसिंहपुर, रीवा, सागर, टीकमगढ़, जबलपुर और उमरिया में तापमान 20 डिग्री से कम ही रहा।

अगले 24 घंटे साफ रहेगा मौसम-सिस्टम की एक्टिविटी कमजोर होने के बाद अगले 3 दिन तक बारिश होने का अनुमान नहीं है। एक सिस्टम बंगाल की खाड़ी में एक्टिव हुआ है। इसका असर 24 अक्टूबर के बाद देखने को मिल सकता है।

सरस्वती शिशु मंदिर के भैया बहनों ने व्यवहारिक ज्ञान प्राप्ति हेतु नगर पंचायत परिषद, रेल्वे स्टेशन का भ्रमण

हीरालाल गोलानी सोहागपुर।

विद्या भारती हमेशा सरस्वती शिशु मंदिर के भैया बहनों की उन्नति के लिए अग्रसर रहते हैं। इसी तारतम्य में व्यवहारिक ज्ञान प्राप्ति योजना के लिए सरस्वती विद्या मंदिर सोहागपुर के भैया बहनों के दल ने नगर पंचायत परिषद कार्यालय एवं रेल्वे स्टेशन का भ्रमण किया।

प्राचार्य अशोक कुमार दुबे ने बताया कि 9 वीं एवं 10 वीं कक्षा के भैया बहनों के लिए दिशा बोध शिविर आयोजित किया गया है। जिसमें नगर पंचायत परिषद के कार्यालय में पहुंचकर विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं का अवलोकन किया ।इसके साथ ही नगर पंचायत परिषद के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कचरा प्रबंधन जल प्रबंधन, पानी निकासी के साथ साथ

कार्यालयीन व्यवस्था को समझाया ।

इसी क्रम में रेलवे स्टेशन पर स्टेशन प्रबंधक ने विभिन्न व्यवस्थाओं को भैया बहनों को समझाया। जिसमें ट्रेनों कि सिग्नल व्यवस्था, रेलवे क्रासिंग की व्यवस्था का भी अवलोकन कराया गया।

प्राचार्य अशोक कुमार दुबे ने अंत में बताया कि नगर पालिका अधिकारी राकेश मिश्रा ,नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष लता यशवंत पटैल, अमित परसाई प्रबुद्ध दुबे, अधिकारी कर्मचारीयों एवं स्टेशन प्रबंधक जी. एस. पटैल एवं रामस्वरूप कुशवाहा ने सरस्वती शिशु मंदिर के भैया बहनों एवं उनके साथ पहुंचे प्राचार्य, आचार्य को सहयोग किया गया ।

बड़ी कंपनियों की वादाखिलाफी से उपभोक्ता, उपभोक्ता फोरम में जाने को मजबूर...

नर्मदापुरम। दीपावली प्रारंभ हो उसके साथ ही बड़ी बड़ी कंपनियां आम आदमी की जेब पर लूट का तानाबाना अपने नियुक्त प्रतिनिधियों के माध्यम से बुनना शुरू कर देती, जिससे कोई अपने को ठगा महसूस करेगा और कोई अपनी इच्छा पूर्ति के लिए खून पसीने की कमाई से भौतिक संसाधन की लालसा रखेगा। ऐसी स्थिति में उसके सपनों का महल टूट जाये, तो वह क्या करेगा.? खुद को लूटा पिटा महसूस करेगा या मानसिक दुविधा का शिकार व बीमारियों से ग्रस्त होकर जीवन जीने की इच्छा खो देगा। आज के युग में बैंक से कर्ज लेकर आम आदमी अपने सुख सुविधाओं की कल्पना का प्रयास करता है। अगर वह बिखर जाये तो..? क्या ऐसा आम आदमी के साथ होता है..? इसमें किसी का मनोबल सर्वोपरि हुआ तो वह अपने अधिकार की लड़ाई लड़ता है। ऐसा वाक्या नगर के ही एक संभ्रांत के साथ 18 फरवरी को घटित हुआ, रीतेश दत्त के घर की सदस्य मारुति सुजुकी कंपनी की एर्टिगा ष्टद्ध +,स्लक्क04ष्टङ्ग4841 की तकनीकी खराबी के साथ उत्पन्न हुआ उन्होंने तुरंत बिना किसी लापरवाही के राजरूप मोटर जंक्शन भोपाल सर्विस सेंटर जाने का फैसला लिया और 18 फरवरी 2024 को सुबह 10 बजकर 44 मिनिट में जॉब कार्ड 1831873891 वाहन क्रमांक स्लक्क04ष्टङ्ग4841 जो कि 31,423 किलोमीटर चली सर्विस एडवाइजर द्वारा तैयार कर उसे दिया गया, बताया गाड़ी की तकनीकी खराबी की वजह से स्नास साइड का व्हील घिस रहा था। शाम तक रुकने कहा गया शाम को कहा गया कि गाड़ी छोड़नी पड़ेगी कंपनी को मेल किया है। जैसे ही अप्रूबल आयेगा आपको कॉल कर बुलाया जायेगा।फिर आप गाड़ी ले लिजियेगा। इस काम के लिए

क्रमशः उसकी सर्विस सेंटर के नियुक्त अधिकारियों से चर्चा होती रही करीब एक माह मानसिक तनाव से गुजरते हुए उन्होंने स्स्द्गरु गुड़गांव के टोल फ्री नंबर पर 14 मार्च 2024 को शिकायत क्रमांक,5705323460 से जरिए दर्ज किया। वहां संपर्क करने पर कहा जाता रहा आपकी गाड़ी सुधार कर ही आपको दी जायेगी। उन्हें शो रूम के सर्विस सेंटर के तरूसे बात करने के निर्देश स्स्द्गरु ने दिए। उन्होंने जब कंपनी का रिफरेंस देकर बात की जबाब में तरूको हिदायत देने का कहा कि वे आपसे इस संदर्भ में शाम तक बात करेंगे और पूरी टीम आपका सहयोग करेगी बताया किंतु उन्हें कोई कॉल नही आया, किसी भी तरह से उन्होंने अपने परिचितों के माध्यम से गाड़ी की तकनीकी खराबी को सुधार कर देने का निवेदन किया जिसे टाला गया। उनकी गाड़ी को जबकि उन्हें जनवरी 2021 के कंपनी द्वारा जारी सर्कुलर के आधार पर सुधार कर देना चाहिए था। जिसमें कंपनी ने तमाम डीलरों को यह निर्देश दिए हैं, कि आपको 2020 के पहले की निर्मित गाड़ी मालिकों को वाहन सहित बुलाकर उनका यह पार्ट कंपनी अपने खर्चे पर बदलेंगी। आप केवल सर्विस चार्ज ही ग्राहक से लेंगे.. किन्तु 2024 तक इसकी सूचना उन्हें नही दी गई। गाड़ी की शिकायत स्स्द्गरु गुड़गांव में जो दर्ज थीं। वह सांठगांठ से बंद कर दी गई। इसकी जानकारी उन्हें नहीं दी जबकि कस्टमर केयर मैनेजर के द्वारा ग्राहक से कार्य संतुष्टि का फीडबैक लिया जाता रहा। जिसकी जानकारी लेना इन्होंने उचित नहीं समझा। जब उन्होंने स्स्द्गरु गुडगांव पुनः बात की और शिकायत का क्या हुआ पूछा तो जबाब मिला आपकी शिकायत बंद कर दी गई है। जबकि गाड़ी की समस्या अभी निराकरण नहीं हुआ। गाड़ी अभी सर्विस सेंटर पर ही है। फिर शिकायत बिना उन्हें जानकारी दिए क्यो बंद की..? यहां फिर एक बार शिकायत नंबर ,7240071817 दिनांक 28 जून 2024 को दर्ज किया गया।अत्यधिक परेशानी से गुजरते हुए उन्होंने जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग, भोपाल की मदद ली। परिवाद पत्र अंतर्गत धारा 35 उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 का प्रकरण 8 अप्रैल 24 को दर्ज हुआ। इन्होंने कोर्ट के आदेशों, सूचनाओं का जबाब देना समय से उचित तक नहीं समझा। अब उन्हें मजबूरन न्याय के लिए यह खबर सार्वजनिक करना पड़ रही। जिससे कोई और दिपावली के पावन अवसर पर इन शिकारियों का शिकार ना हो जाये।

14 लाख की गाड़ी बैंक कर्ज पर जिसकी ईएमआई

प्रतिमाह 16500/- बैंक को चुकाना पड़ रहा, इससे तो ले देकर नामी गिरामी कंपनी के अधिकृत डीलर लूटखसोट का अड्डा समझ आ रहे। जब गाड़ी खरीदने जाते हैं। तब ग्राहकों को कई लुभावनात्मक वादे कर बीमा, रजिस्ट्रेशन, एसेसरीज, एक्सटेंड वारंटी, एक्स्ट्रा कूपन, बोनस कार्ड अंक के नाम से ग्राहक को लूटते है। फिर धोखा सामने आता है। उन्हें भी पांच साल की एक्सटेंड वारंटी दी गई परन्तु यह कह कर टाल दिया कि आपकी गाड़ी की एक्सीडेंटल हिस्ट्री है। जबकि गाड़ी शुरू से आज तक इन्ही के पास सर्विसिंग और अन्य कार्य के लिए गई है। मालूम हुआ कि इन्होंने फर्जी प्रकरण व हस्ताक्षर के माध्यम से क्लेम द्वारा पैसा बीमा कंपनी से लेना चाहा जो कि बाद में उनके संज्ञान में आया। परेशान रीतेश के पास अपनी गाड़ी होते हुए (आज तक गाड़ी नहीं मिल पाने के कारण) जिसे हार्ट के इलाज के लिए नागपुर जाना पड़ता है। नहीं जा नहीं पाया। इधर मां उम्र दराज है इनका भी इलाज भी बाहर चल रहा है ऐसे में वह गाड़ी नही रहने से स्वास्थ लाभ दिलाने में असमर्थ हो गया। श्रीमति का भी तीन बार एक्सीडेंट हो गया। आस पड़ोस की मदद से उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। परंतु गाड़ी नहीं रहने से जो नुकसान भोग रहा है।

राइट क्लिक

'जनसंख्या जिहाद' का पलटवार या सियासी सत्ता संतुलन की प्री-प्लानिंग?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

देश के दक्षिणी राज्यों से आबादी बढ़ाने की जो आवाजें उठी हैं, क्या वो 'जनसंख्या जिहाद' का पलटवार है या भविष्य में राजनीतिक सत्ता सूत्र अपने हाथों में रखने की प्री प्लानिंग है अथवा देश में क्षेत्रवार आबादी के असंतुलन से होने वाले व्यापक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दुष्प्रभावों के मद्देजर ऐहतियाती उपाय अभी करने का आग्रह है, इसे हमे गहराई से समझना होगा। दक्षिणी राज्यों के दो मुख्यमंत्रियों ने हाल में अपने प्रदेश के लोगों से आबादी बढ़ाने की जो अपील की है, वो भारत में 'जनसंख्या विस्फोट' को रोकने के लिए अब तक चली आ रही 'परिवार नियोजन' थ्योरी के ठीक विपरीत है। तो क्या इन नेताओं को बेतहाशा बढ़ती आबादी से जुड़े खतरों का भान नहीं है या फिर वो सीमित परिवारों के आग्रह में छिपे आसन्न खतरों को भांप कर ऐसा कह रहे हैं? आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने हाल ही में कहा कि अब उनकी सरकार पुराने कानून में बुनियादी बदलाव कर उन्हीं लोगों को चुनाव लड़ने की अनुमति देगी, जिनके 2 से ज्यादा बच्चे हों। अभी तक दो से ज्यादा बच्चों वाले माता-पिता स्थानीय निकाय चुनाव नहीं लड़ सकते थे। नायडू ने इस के पक्ष में दलील दी कि वृद्धावस्था की समस्या के संकेत दक्षिण भारत, खासतौर से आंध्र प्रदेश में दिखने लगे हैं। जापान, चीन और कुछ यूरोपीय देश पहले ही इस समस्या का सामना कर रहे हैं, जहां बुजुर्गों की संख्या अधिक है। दक्षिण भारत में यह समस्या और गंभीर है क्योंकि युवा रोजगार की तलाश में बाहर चले जाते हैं। परिणामस्वरूप कई गांवों में तो अब बुजुर्ग ही रह गए हैं। नायडू ने यह भी कहा कि दक्षिणी राज्यों में प्रजनन दर 1.6 तक गिर चुकी है, जो राष्ट्रीय औसत 2.1 से काफी कम है। अगर यह और घटती है, तो 2047 तक बुजुर्गों की संख्या अधिक होगी, जो कि वांछनीय नहीं है। चंद्रबाबू के बयान के दूसरे ही दिन तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के.स्टालिन ने भी लगभग उसी बात को दोहराया। हालांकि उनका उद्देश्य स्पष्ट रूप से राजनीतिक था। हिंदू धार्मिक मामलों के विभाग के तत्वावधान में आयोजित एक सामूहिक विवाह समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि संसदीय परिसीमन प्रक्रिया से दंपत्तियों को अधिक बच्चे पैदा करने और छोटा परिवार का विचार छोड़ने के लिए प्रोत्साहन मिल सकता है। उन्होंने कहा कि अतीत में, बुजुर्ग नवविवाहित जोड़ों को 16 बच्चों का नहीं बल्कि 16 तरह की संपत्ति अर्जित करने और खुशहाल जीवन जीने का आशीर्वाद देते थे। अब उन्हें सचमुच 16 बच्चे पैदा करने चाहिए, न कि एक छोटा और खुशहाल परिवार रखना चाहिए।

वैसे नायडू के कथन में सच्चाई है कि बेशक आज भारत सबसे ज्यादा युवाओं का देश है। वर्ल्ड पापुलेशन प्रॉस्पेक्टस की रिपोर्ट के मुताबिक भारत की 65 फीसदी 35 साल के नीचे की है। लेकिन तीस साल बाद यही आबादी 65 वर्ष की होगी। यानी भारत में हर पांचवा शख्स बुजुर्ग होगा। यह आबादी करीब 35 करोड़ होगी। यह वो आबादी होगी, जो सेवानिवृत्त अथवा कम कार्यक्षम लोगों की होगी।

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में जहां आबादी का अर्थ जनशक्ति से ज्यादा 'वोट' हो चुका है, वहां जनसांख्यिकीय संतुलन का अर्थ राजनीतिक सत्ता को कायम रखना अथवा बदलने की ताकत से है। जब से देश में धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति हावी हुई है, तब से यह जनसंख्या संतुलन के प्रति यह नजरिया और उग्र हुआ है। यह भावना तेजी से गहरा रही है कि किसी विशेष धर्म, जाति अथवा समुदाय की संख्या से ही सियासी शक्ति से अर्जित किया जा सकता है और उस पर पकड़ बनाई रखी जा सकती है। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के विधायक महबूब अली ने खुले तौर पर घोषणा कर दी कि राज्य में मुसलमानों की आबादी तेजी से बढ़ रही है। हम यूपी पर राज करेंगे। इसमे सच्चाई कितनी है, यह अलग बात है। लेकिन भावनात्मक स्तर पर यह भी एक तरह का 'जनसंख्या जिहाद' ही है। प्रकारांतर से आबादी को बढ़ाना सत्ता में रहने का रामबाण नुस्खा है। याद करें, उस नारे को जिसमें यह आह्वान किया गया है 'जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी।' इसका सीधा अर्थ यही है कि न केवल सत्ता बल्कि सामाजिक और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण और वर्चस्व के लिए जरूरी है कि आपकी संख्या अन्य से ज्यादा हो। वरना आप की स्थिति दोयम दर्जे की हो सकती है। संभव है कि आप कहीं भी निर्णायक स्थिति में रहें। ये डर केवल काल्पनिक है, ऐसा भी नहीं है। देश में जहां-जहां धार्मिक आधार पर जनसांख्यिकी बदली है, वहां अलगाववाद और विभाजन की दरारें गहराने लगी हैं। और यह केवल भारत में ही नहीं हो रहा है, लोकतंत्र और व्यक्ति और अभिव्यक्त स्वातंत्र्य के घोर समर्थक यूरोपीय देशों में भी हो रहा है।

हालांकि कुछ लोग इसे केवल मिथक मानते हैं, लेकिन देश में बहुसंख्य हिंदुओं की आबादी वृद्धि दर में गिरावट को लेकर आरएसएस के पूर्व सरसंघचालक के.सी. सुदर्शन ने 2000 में ही इस मुद्दे को उठाया था। 8 साल पहले संघ प्रमुख डॉ.मोहन भागवत ने भी कहा था कि बहुसंख्य हिंदुओं की घटती आबादी चिंता का विषय है। उन्होंने युवा दंपत्तियों से आग्रह किया था कि वो दो से ज्यादा बच्चे पैदा करें। लगभग यही बात हाल में निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर प्रेमानंद पुरी ने भी कही। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में उसी का राज चलता है, जिसकी जितनी ज्यादा संख्या होती है। इसी तरह और भी हिंदू साधु संत इस तरह के आह्वान करते रहते हैं। ऐसी बातों का प्रजनन योग्य युवाओं पर कितना असर होता है, यह स्वतंत्र अध्ययन का विषय है, क्योंकि नेताओं, संतों के आग्रह में यह कहीं स्पष्ट नहीं होता कि ज्यादा बच्चे पैदा करने के बाद उनके समुचित पालन पोषण की जिम्मेदारी कौन लेगा? इसके लिए जरूरी संसाधन कहां से आएंगे? बच्चों की अच्छी परिवरिश में होने वाले कष्टों में हिस्सेदारी कौन और कैसे करेगा? या केवल आबादी बढ़ाने के चक्कर में वो ऐहिक जीवन दांव पर लगा दें?

वैसे भी जो नेता, सामाजिक संगठनों के प्रभावी पुरूष और साधु संत ऐसे आह्वान करते रहते हैं, उनका लोगों और खासकर हिंदुओं की आबादी बढ़ाने में निजी स्तर पर कोई खास योगदान नहीं है। या तो वे इसकी जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते या फिर अपने संसाधनों को बंटने नहीं देना चाहते। खुद चंद्रबाबू नायडू का एक बेटा है और स्टालिन की सिर्फ दो संतानें हैं। प्रचारक और साधु संतों के परिवार ही नहीं होते। इनमें केवल राजद नेता लालू प्रसाद को अपवाद माना जा सकता है, जिन्होंने अपनी तमाम राजनीतिक सक्रियता के बावजूद परिवार विस्तार के मोर्चे को कमजोर नहीं होने दिया और 9 संतानों के पिता बने। हालांकि लालू ने कभी दूसरों को ऐसा करने की सार्वजनिक सलाह नहीं दी।

एक समय था, जब देश की आबादी आज से भी आधी थी और चौतरफा 'हम दो हमारे दो'का शोर था। कहा जा रहा था कि एक गरीब देश भारी आबादी के बोझ को सह नहीं सकता। लेकिन हमने इतनी तरक्की तो कर ली है कि देश आज 145 करोड़ की आबादी को भी खिला रहा है। तो फिर और आबादी बढ़ाने की बात क्यों की जा रही है? इसके कई पहलू हैं। पहला तो राजनीतिक है। 2026 में देश में लोकसभा और विधानसभा सीटों का आबादी के अनुसार नए सिरे से परिसीमन होना है। इसका क्या फार्मूला होगा, यह अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन अगर आबादी को ही आधार माना गया तो लोकसभा की वर्तमान सीटें 543 से बढ़कर 888 होने वाली हैं। इनमें सर्वाधिक सीटे सबसे ज्यादा आबादी वाले यूपी में बढ़ेंगी, जो वर्तमान की 80 से बढ़कर 147 हो जाएंगी। इसके बाद महाराष्ट्र, बिहार, पं.बंगाल और मप्र का नंबर है। ये सभी उत्तर और पश्चिमी भारत के राज्य हैं। ऐसे कुल 18 राज्यों में वर्तमान में लोस की फिलहाल 382 सीटें हैं, जो परिसीमन के बाद 688 हो सकती हैं, जबकि दक्षिण के पांच राज्यों में वर्तमान में 129 सीटें हैं, जो बढ़कर 184 ही होंगी। इसी तरह पूर्वोत्तर के राज्यों की सीटों में भी मामूली बढ़ोतरी ही होगी, क्योंकि उनकी आबादी वृद्धि दर बहुत कम है।

तो क्या आबादी का ज्यादा न बढ़ना, खुशहाली की गारंटी भले हो, लेकिन राजनीतिक सत्ता संतुलन में एक नकारात्मक फैक्टर है? दक्षिण के राज्यों का यह सवाल वाजिब है कि अगर उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को काबू में रखकर आर्थिक मोर्चे पर तेजी से तरक्की की तो क्या यह उनका अपराध है, बनिस्बत उन उत्तर और राज्यों के जहां आबादी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन विकास की दौड़ में वो दक्षिणी राज्यों से अभी भी पीछे हैं। डर ये है कि नए परिसीमन के बाद कम आबादी के कारण केन्द्रीय सत्ता में दक्षिणी राज्यों की भागीदारी कम होती जाएगी, जो एक संघ राज्य के लिए ठीक नहीं होगा। राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता में न्यून भागीदारी अलगाववाद की भावना को बढ़ा सकती है और एक राष्ट्र राज्य की अवधारणा इससे खंडित हो सकती है। ये डर इसलिए भी है कि बीजेपी जैसी कोई पार्टी केवल उत्तर पश्चिमी राज्यों से ही इतनी सीटें जीत लेगी कि सत्ता हासिल करने के लिए उसे दक्षिणी राज्यों की जरूरत ही न पड़े। दूसरे, आबादी के असंतुलन का सामाजिक,सांस्कृतिक और आर्थिक परिणाम भी होगा। न केवल विभिन्न धार्मिक समुदायों में बल्कि खुद हिंदू समाज में भी।

यहां प्रश्न यह भी है कि लोग कितने बच्चे पैदा करें, या न करें, कैसे करें, इसमें सरकारों को दखल देना चाहिए या नहीं? चीन का उदाहरण सामने है। उसे जनसंख्या और लैंगिक असंतुलन के चलते अपनी 35 साल पुरानी 'एक परिवार, एक बच्चा' नीति बदलनी पड़ी और दो बच्चों की अनुमति देनी पड़ी। इसके बाद भी वहां युवा दंपत्ति बच्चे पैदा करने में ज्यादा रूचि नहीं दिखा रहे हैं तो इसके पीछे कई सामाजिक और आर्थिक कारण हैं। भारत में भी स्थिति काफी कुछ वैसी ही बनती जा रही है, क्योंकि अब बच्चा पैदा करना केवल मर्दानगी अथवा मातृत्व क्षमता का सवाल भर नहीं है, बच्चों की परव रिश कैसे करें, यह प्रश्न भी पहाड़ जैसा है।

शव से लिपट गईं बेटी-पत्नी, बेटे ने दी मुखाग्नि

●जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमले में मारे गए सीधी के इंजीनियर का अंतिम संस्कार

सीधी (नप्र)। 1 जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमले में मारे गए मध्यप्रदेश के सीधी जिले के इंजीनियर अनिल शुक्ला (45) का मंगलवार को उनके पैतृक गांव दिठौरा में अंतिम संस्कार किया गया। बेटे ओम शुक्ला ने पिता को मुखाग्नि दी। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। इंजीनियर को नम आंखों से अंतिम विदाई दी गई। इससे पहले मंगलवार को ही इंजीनियर अनिल शुक्ला का शव उनके गांव दिठौरा लाया गया। यहां शव को देखते ही पत्नी और बेटी समेत परिवार वाले बिलख पड़े। बेटी और पत्नी को शव से लिपट गईं। लोगों ने उन्हें ढांढस बंधाया। जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में 20 अक्टूबर रविवार की रात में आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग की थी। इसमें सात लोगों की मौत हो गई थी। इनमें मध्यप्रदेश के सीधी जिले के रहने वाले इंजीनियर अनिल शुक्ला (45) भी शामिल थे। वे जेपी फैक्ट्री में सिविल इंजीनियर थे। इन दिनों जम्मू-कश्मीर में सुरंग बनवाने का काम करा रहे थे। इंजीनियर अनिल शुक्ला का उनके पैतृक गांव में सोन नदी के किनारे अंतिम संस्कार किया गया।

एयर एम्बुलेंस से लाया गया इंजीनियर का शव

मुंबई से अनिल के भाई शव को लेने सोमवार को जम्मू कश्मीर गए थे। यहां से कंपनी की ओर से एयर एम्बुलेंस की मदद से शव बनारस लाया गया। यहां से सड़क मार्ग से दोपहर करीब ढाई बजे शव रामपुर नैकिन क्षेत्र के दिठौरा गांव लाया गया। इस मौके पर सांसद डॉ. राजेश मिश्रा और उनके साथ भाजपा नेता भी इंजीनियर को अंतिम विदाई देने पहुंचे। दोपहर करीब 3:30 बजे गांव में ही सोन नदी के किनारे खैराघाट पर अंतिम संस्कार हुआ।

शव के आते ही बिलख पड़े परिवार के लोग

इससे पहले शव जैसे ही गांव पहुंचा, पत्नी ममता शुक्ला और बेटी आकांक्षा शुक्ला बिलख पड़े। वे शव से लिपट गए। पत्नी बार-बार बेहोश हुए जा रही थी। परिवारवालों का रो-रोकर बुरा हाल है। इधर, पिता विश्वनाथ शुक्ला भी बेटे के शव को देखकर रो पड़े।

पीथमपुर में नवविवाहिता ने बाथरूम में लगाई फांसी

●6 महीने पहले हुई थी शादी, पिता बोला- दोनों खुश थे; घटना के समय पति बाहर था

पीथमपुर (नप्र)। पीथमपुर के बगदून थाना क्षेत्र में एक नवविवाहिता (20) ने सोमवार देर रात बाथरूम के रोशन दान पर दुपट्टे से लटककर सुसाइड कर लिया है। घटना की सूचना के बाद मौके पर पहुंची पीथमपुर पुलिस ने शव को फांसी के फंदे से उतरवाया। इसके बाद पंचनामा बनाकर शव को पोस्टमॉर्ट्म के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा। जहां नवविवाहिता के पिता और अन्य परिजनों के पहुंचने के बाद पोस्टमॉर्ट्म की कार्रवाई शुरू की गई है।

व्यंग्यकार शशांक दुबे और प्रमोद तांबट को ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य सम्मान

वरिष्ठ व्यंग्यकार ब्रजेश कानूनगो दीर्घकालीन व्यंग्य सेवा सम्मान से होंगे सम्मानित

भोपाल। देश के प्रमुख व्यंग्यकारों की संस्था व्यंग्य लेखक समिति ने वर्ष 2024 के पुरुस्कारों की घोषणा कर दी है। ये पुरस्कार 15 दिसंबर को रतलाम में आयोजित ज्ञान चतुर्वेदी सम्मान समारोह में प्रदान किए जाएंगे। इस वर्ष ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य सम्मान संयुक्त रूप से श्री शशांक दुबे, उज्जैन एवं श्री प्रमोद ताम्बट, भोपाल को प्रदान किया जा रहा है। इसके अलावा इस बार से कुछ नए महत्वपूर्ण पुरस्कारों की श्रेणियां भी बनाई गई हैं। जिनमें वलेस दीर्घकालिक व्यंग्य सेवा सम्मान श्री ब्रजेश कानूनगो, इंदौर को तथा वलेस श्रेष्ठ नव पल्लव व्यंग्य सम्मान संयुक्त रूप से श्री ऋषभ जैन, दुर्ग एवं श्री मुकेश राठौर, खरगोन तथा वलेस व्यंग्य साधक सम्मान डॉ. हरीश कुमार सिंह, उज्जैन को प्रदान किया जा रहा है। वलेस श्रेष्ठ व्यंग्य विदुषी सम्मान सुश्री सारिका गुप्ता, इंदौर एवं सुश्री अनीता श्रीवास्तव, टीकमगढ़ को मिलेगा। संयोजक व्यंग्यकार श्री शांतिलाल जैन ने बताया कि वर्ष के वलेस ज्ञान चतुर्वेदी सम्मान की घोषणा करते हुए हमें अत्यंत हर्ष है।

समय के साथ खट्टे-मीठे अनुभवों और चुनौतियों का सामना करते हुए, बिना किसी औपचारिक संरचना के, हम वर्ष 2024 तक इस पहल को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा पाए हैं। यह उपलब्धि इस अनूठे समूह की एकता और प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इसका सर्वाधिक श्रेय दिवंगत सुशील सिद्धार्थ जी और सम्माननीय डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी जी को है। इस बार सम्मान की श्रेणियों और पुरस्कारों में भी विस्तार किया गया है। निर्णायक मंडल की अध्यक्षता व्यंग्यकार कैलाश मंडलेकर को सौंपी गई थी, और उनके साथ श्री जवाहर कर्नावट, श्री मलय जैन, और सुश्री इंद्रजीत जी जैसे प्रबुद्ध सदस्य शामिल थे। यह समझना कठिन नहीं है कि व्यंग्य के क्षेत्र में इतने योग्य साथियों के बीच से चयन करना कितना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। निर्णायकों ने इस कार्य को पूरी निष्पक्षता और कुशलता से निभाया है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

महर्षि वाल्मीकि जयंती पखवाड़े का समापन

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी झीलों की नगरी भोपाल स्थित मानस भवन गुफा मंदिर मार्ग पर सकल वाल्मीकि पंचायत भोपाल एवं महर्षि वाल्मीकि जयंती उत्सव समिति भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में रामायण रचयिता भगवान महर्षि वाल्मीकि जयंती पखवाड़े का समापन कार्यक्रम मध्य प्रदेश शासन के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन जी यादव एवं श्री क्षेत्र वाल्मीकि धाम पीठाधीश्वर परम पूज्य राष्ट्रीय संत बाल योगी श्री उमेश नाथ जी महाराज राज्यसभा सांसद जी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ इस अवसर पर मध्य प्रदेश शासन के तकनीकी कौशल विकास मंत्री श्री गौतम जी टेटवाल, नगर निगम परिषद भोपाल के अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी जी सकल वाल्मीकि पंचायत भोपाल के रवि चोधरी जगनलाल झांझोट एवं वाल्मीकि उत्सव समिति के अध्यक्ष सुनील मैना वरिष्ठ समाजसेवी चिमनजी कल्याणे, मगनलाल झां, राधेश्याम गूजर, प्रेमचंद्र चौहान, सुदेश कल्याणे, गोपाल धूलिया संतोष पथरोड और सैकड़ों की संख्या भोपाल और संपूर्ण मध्य प्रदेश से आए वाल्मीकि समाज जन और मातृशक्ति उपस्थित थे, इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री जी और पूज्य गुरुदेव जी का सकल वाल्मीकि पंचायत भोपाल द्वारा स्वागत सम्मान कर स्मृति चिन्ह भेंट किया, सभी ने पूज्य गुरु जी को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

भोपाल में 5वीं के छात्र की संदिग्ध मौत

सीढ़ियों की रेलिंग पर गमछे से बने फंदे में लटका मिला

भोपाल (नप्र)। शहर के बाग फरहत अफजा में 5वीं के छात्र की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। घटना सोमवार करीब 2 बजे की है। बताया जा रहा है कि बच्चे ने मोबाइल नहीं मिलने के चलते फांसी लगाई है। वहीं परिजनों ने पुलिस को बताया कि बच्चे का सीढ़ियों से पैर फिसला, जिसकी वजह से किसी कपड़े से उसके गले में सीढ़ियों पर फांसी लग गई। पुलिस ने शव को पीएम के लिए हमीदिया में रखवा दिया है। आज पीएम कराया जाएगा। पुलिस के अनुसार, ऐजान खान पुत्र शोएब खान (14) बाग फरहत अफजा में रहता था। सोमवार को दोपहर करीब दो बजे ऐजान के चाचा नमाज पढ़ने जा रहे थे। तभी सीढ़ियों की रेलिंग पर उन्हें ऐजान कपड़े से लटका हुआ मिला। परिजन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। ऐशबाग थाना प्रभारी जितेंद्र गढ़वाल के अनुसार अभी यह स्पष्ट नहीं है कि किशोर ने फांसी लगाई है या हादसा हुआ है। मामले में सभी एंगल से जांच की जाएगी। मां- पिता के अभी बयान दर्ज नहीं किए गए हैं। पीएम रिपोर्ट और परिजनों के बयान दर्ज होने के बाद ही मामले का खुलासा हो सकेगा।

इंदौर को मिला बेस्ट वाटर डिस्ट्रिक्ट अवॉर्ड

दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कलेक्टर और निगम कमिश्नर को दिया सम्मान

इंदौर (नप्र)। इंदौर के नाम एक और राष्ट्रीय उपलब्धि दर्ज हुई है। 5वें नेशनल वाटर अवॉर्ड में इंदौर जिले को वेस्ट जोन में बेस्ट डिस्ट्रिक्ट कैटेगरी में प्रथम स्थान मिला है। मंगलवार को दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने इंदौर जिला कलेक्टर आशीष सिंह और नगर निगम कमिश्नर शिवम वर्मा को इस अवॉर्ड से सम्मानित किया। जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा 5वें राष्ट्रीय जल पुरस्कार-2023 में 9 श्रेणियों में संयुक्त विजेताओं सहित 38 विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। इनमें सर्वश्रेष्ठ राज्य, सर्वश्रेष्ठ जिला, सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत, सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय, सर्वश्रेष्ठ स्कूल या कॉलेज, सर्वश्रेष्ठ उद्योग, सर्वश्रेष्ठ जल उपयोगकर्ता संघ, सर्वश्रेष्ठ संस्थान (स्कूल या कॉलेज के अलावा) और सर्वश्रेष्ठ नागरिक समाज शामिल हैं। जिला पंचायत सीईओ सिद्धार्थ जैन ने बताया कि अवॉर्ड के लिए जिला पंचायत की ओर से नॉमिनेशन किया गया था। हमने जिले की नदियों के कैचमेंट एरिया में जल संवर्धन ट्रीटमेंट के लिए प्लानिंग की थी।

21 बार 'भारत माता की जय' और तिरंगे को सलामी

●थाने जाकर शर्त पूरी की, पाकिस्तान के समर्थन में नारेबाजी पर हाइकोर्ट ने दिया था आदेश

भोपाल (नप्र)। पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाने वाले फैसल उर्फ फैजान खान ने मंगलवार को भोपाल के मिसरोद थाने पहुंचकर तिरंगे को 21 बार सलामी दी और भारत माता की जय बोला। उसने कहा कि मुझे अपनी गलती का अहसास है। पढ़ा-लिखा नहीं होने की वजह से मुझसे ऐसी गलती हुई।

रायसेन के मंडीदीप निवासी फैसल की भोपाल के मिसरोद में पंक्चर बनाने की दुकान है। 17 मई 2024 को उसका एक वीडियो वायरल हुआ था। इसमें वह भारत विरोधी नारे लगाता दिखा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ भी टिप्पणी की थी। वीडियो देखने के बाद बजरंग दल के कार्यकर्ता फैसल के पास पहुंचे तो उसने अभद्रता की। इसके बाद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने उसे मिसरोद पुलिस के हवाले किया और केस दर्ज कराया। पुलिस ने युवक के खिलाफ धारा 153 बी के तहत कार्रवाई की। मामला हाईकोर्ट पहुंचा तो जबलपुर बेंच ने उसे इस शर्त पर जमानत दी थी कि वह महीने में दो बार थाने पहुंचकर 21 बार राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देगा और भारत माता की जय का नारा लगाएगा। आज मंगलवार को फैसल ने पहली बार थाने पहुंचकर सलामी दी। फैजान ने मिसरोद थाने में तिरंगे को 21 बार सलामी दी। भारत माता की जय बोला।

देश विरोधी नारे लगाए, 14 दूसरे केस भी दर्ज : पुलिस पूछताछ में फैसल ने कहा था, मैंने मजाक में ये शब्द कहे थे। जिसने वीडियो बनाया है, वह मेरा दोस्त है। पता नहीं था कि वीडियो वायरल हो जाएगा। पुलिस ने जांच के बाद ट्रायल कोर्ट में आरोप पत्र पेश किया। यहां जमानत निरस्त होने के बाद फैसल ने हाईकोर्ट में जमानत आवेदन पेश किया था। शासन की तरफ से जमानत याचिका का विरोध करते हुए कहा गया कि आरोपी ने देश विरोधी नारे लगाए इसकी वीडियो रिकॉर्डिंग है। इसके अलावा उसके खिलाफ 14 आपराधिक प्रकरण भी दर्ज हैं। याचिकाकर्ता आपराधिक प्रवृत्ति का है।

देश के प्रति सम्मान की भावना पैदा करना मकसद: दोनों पक्षों को सुनने के बाद जस्टिस दिनेश कुमार पालीवाल की एकल पीठ ने फैसल को 50 हजार रुपए के बॉन्ड के साथ जमानत दी थी। उन्होंने अपने आदेश में कहा था, आरोपी को महीने के पहले और चौथे मंगलवार को 10 से 12 बजे के बीच थाने पहुंचकर तिरंगे को 21 बार सलामी देने के साथ भारत माता की जय भी बोलना होगा। उन्होंने यह भी साफ किया था कि यह विशिष्ट शर्त इसलिए लगाई गई है ताकि फैसल के दिल में देश के प्रति सम्मान की भावना पैदा हो।